किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels) (पुरस्कृत)
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) (पुरस्कृत)
ख़ज़ाने की खोज में (Treasure Island) (पुरस्कृत)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio) (पुरस्कृत)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी ताबीज़ (Talisman)
तीसमार ख़ां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
क़ैदी की करामात (Count of Monte Christo)
डेविड कॉपरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ़ की रानी (Anderson's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबी डिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
काला घोड़ा (Black Beauty)
अद्भुत द्वीप (Swiss Family Robinson)
काला फूल (Black Tulip)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्राएं (20,000 Leagues Under the Sea)

ISBN 81-7483-024-3
9788174830241

शिक्षा भारती

तीन तिलंगे THREE MUSKETEERS

तीन तिलंगे

अलेक्जेंडर ड्यूमा के प्रसिद्ध उपन्यास 'थ्री मस्केटियर्स' का सरल रूपांतर

तीन तिलंगे

अलेक्ज़ेंडर ड्यूमा के प्रसिद्ध उपन्यास
'Three Musketeers' का सरल हिन्दी रूपान्तर
रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

₹ 75

ISBN : 9788174830241

संस्करण : 2020 © शिक्षा भारती

TEEN TILANGE (Novel)
by Alexander Dumas
(Abridged Hindi version of *Three Musketeers*)

मुद्रक : जी. एस. ऑफसेट, दिल्ली

शिक्षा भारती
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

तीन तिलंगे

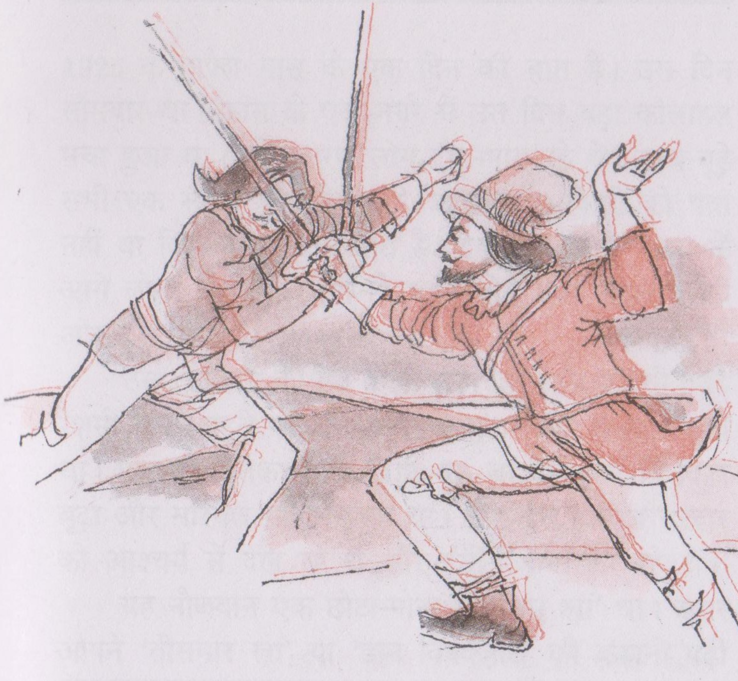

तीन तिलंगे

1925 के अप्रैल मास के एक दिन की बात है। उस दिन सोमवार था। फ्रांस के एक नगर में उस दिन बड़ा कोलाहल मचा हुआ था। चारों तरफ लोग दौड़-भाग रहे थे। बच्चे-बूढ़े सभी एक सराय की ओर भागे जा रहे थे। किसी को पता नहीं था कि आख़िर क्या बात है। देखते-ही-देखते सराय के आगे लोगों की भीड़ जमा हो गई। लोग एक नौजवान की ओर देख रहे थे।

उस नौजवान की उम्र अठारह-उन्नीस साल की थी। वह रेशमी कपड़े पहने था और कमर में एक लम्बी तलवार बांधे था। पास ही उसका घोड़ा खड़ा था, जो देखने में बिलकुल बूढ़ा और मरियल मालूम होता था। लोग इस विचित्र सरदार को आश्चर्य से देख रहे थे और हंसी-मज़ाक कर रहे थे।

यह नौजवान एक छोटा-मोटा 'तीसमार ख़ां' था। अगर आपने 'तीसमार ख़ां' या 'डान क्विक्ज़ोट' की कहानी पढ़ी

होगी, तो आसानी से समझ लेंगे कि इस विचित्र सरदार व इसके घोड़े को देखने के लिए नगर के इतने लोग क्यों उमड़ पड़े थे।

यह नन्हा तीसमार ख़ां संसार में बहादुरी के काम करने के लिए घर से निकला। उस समय पिता ने इसे अपना सबसे प्यारा घोड़ा दिया और अपनी कुछ सीख भी दी।

पिता ने इससे कहा था, ''बेटा, तुम परदेश जा रहे हो, इसलिए मेरी दो-चार बातें याद रखना। मैं तुम्हें अपना यह घोड़ा दे रहा हूं। यह तुम्हारी तरह इसी घर में जन्मा था और अब तक बारह-तेरह साल का हो चुका है। अच्छा सुनो, पहली बात तो यह कि अगर तुम कभी सौभाग्य से सम्राट के दरबार में पहुंच सको तो तुम अपने ख़ानदान के ऊंचे नाम को न भूलना। अपने ख़ानदान की इज़्ज़त अब तुम्हारे ही हाथ में है। इतना याद रखना कि तुम्हें सम्राट के अलावा और किसी के आगे सिर झुकाने की ज़रूरत नहीं है।

''तुम्हें देने के लिए मेरे पास और कुछ नहीं है, लो यह पन्द्रह क्राउन अपने पास रख लो। दूसरी बात यह है कि तुम्हारी मां ने एक ख़ानाबदोश औरत से एक मरहम बनाना सीखा था। तुम भी इसे बनाने का हुनर सीख लो। इसे किसी घाव पर लगाने से थोड़े ही समय में घाव ठीक हो जाता है।

''इसके अलावा तुम पेरिस में एक पुराने सरदार से ज़रूर मिलना। तुम्हारे लिए उनका जीवन आदर्श है। उनका नाम है मस्यो त्रिवेल। हम दोनों में बड़ी दोस्ती थी। आजकल वे सम्राट के अंगरक्षकों के सेनापति हैं। उन्हें दस हज़ार क्राउन

महीना वेतन मिलता है। लेकिन एक दिन वे तुम्हारे जैसे ही साधारण आदमी थे। मैं उनके नाम तुम्हें एक चिट्ठी लिख देता हूं।''

इस तरह सीख देकर पिता ने उसको आशीर्वाद दिया और घर से विदा किया। इस नौजवान का नाम दार्ता था।

सराय के पास इकट्ठी भीड़ की परवाह न करके दार्ता ने देखा कि सराय की खिड़की में एक लम्बा-तगड़ा आदमी बैठा था और उसकी ओर इशारे करके अपने पास बैठे दो आदमियों से कुछ कह रहा था। दार्ता ने सुना कि असल में वे लोग उसके घोड़े के बारे में हंसी-मज़ाक कर रहे थे। दार्ता को यह बात बहुत बुरी लगी। उसने सोचा कि देहात का रहने वाला हूं, इसलिए ये लोग मेरा मज़ाक बना रहे हैं, यह सब सहन नहीं करना चाहिए।

वह गुस्से में कांपते हुए बोला, ''क्यों साहब, आप खिड़की में बैठकर अपने को क्या समझ रहे हैं? मैं जानना चाहूंगा कि आप मुझे देखकर आख़िर हंस क्यों रहे हैं?''

उसकी बात सुनकर पहले तो सब लोग चौंके, लेकिन फिर ठट्ठा मारकर हंस पड़े। इससे दार्ता को और भी बुरा लगा और उसका हाथ तलवार की मूठ पर पहुंच गया। यह देखकर उस लम्बे-चौड़े आदमी ने, जो शायद कोई फ़ौजी सरदार था, उसके घोड़े की ओर उंगली उठाते हुए कहा, "यह तुम्हारा घोड़ा अब बुढ़ौती के मारे खच्चर हो गया है। इसी मरियल घोड़े को देखकर हम लोग हंस रहे हैं।"

दार्ता ने कड़ककर कहा, "घोड़ा देखकर तुम लोग भले ही हंस लो, लेकिन घुड़सवार को देखकर तुम्हारी हंसी बन्द हो जाएगी।"

"अच्छा यह बात है !" यह कहकर सरदार नीचे उतर आया और दार्ता को घूरते हुए बोला, "जाओ, अभी तुम बच्चे हो।" और वह घूमकर दूसरी ओर जाने लगा।

इतने में ही दार्ता ने तलवार खींच ली और गरजकर बोला, "पीठ फेरकर कहां जा रहे हो ? मैं किसी की पीठ पर वार नहीं करता।"

"कैसा वार ! तुम मुझसे लड़ना चाहते हो ?" सरदार ने पलटकर कहा, "छोकरे, तेरा दिमाग़ तो ख़राब नहीं हो गया है !"

लेकिन तब तक दार्ता ने उछलकर उसपर वार भी कर दिया। अगर सरदार समय रहते ही अलग न हट गया होता, तो उसका सिर ज़मीन पर आ गिरा होता। अब उसकी समझ में आया कि यह लड़का मज़ाक नहीं कर रहा है। देखते-देखते सरदार के दूसरे साथी भी तलवारें लेकर दार्ता पर टूट पड़े।

लेकिन दार्ता बिलकुल नहीं घबराया। वह उनका मुकाबला करने लगा। सरदार ने अपने साथियों से कहा, "इसको मारने की ज़रूरत नहीं, इसकी तलवार छीन लो और इसे इसके मरियल घोड़े पर बैठाकर शहर के बाहर निकाल दो।"

दार्ता ने तलवार चलाते-चलाते जवाब दिया, "जाओ, जाओ ! तुम्हारे जैसे बहुत देखे हैं ! शहर तो मैं छोड़ ही दूंगा, लेकिन तुम्हारा सिर काटकर छोड़ूंगा।"

यह सुनकर सरदार ने मन-ही-मन कहा—ऐसा शानदार लड़का तो बहुत दिनों बाद देखने में आया। तब तक एक आदमी की तलवार से दार्ता लड़खड़ा गया और ज़मीन पर गिर पड़ा।

अब तक वहां बहुत-से लोग इकट्ठे हो गए थे। सरदार के कहने पर सराय के मालिक ने दार्ता को उठाकर अन्दर कमरे में पहुंचाया। कमरे में ले जाकर उसके मुंह पर पानी के छींटे दिए जाने लगे।

कुछ देर बाद सराय वाले ने आकर सरदार से कहा, "हुज़ूर, वह लड़का बेहोश हो गया है, लेकिन बेहोश होने से पहले वह बहुत चीख़ता-चिल्लाता रहा। वह बार-बार अपने कुरते की जेब पर हाथ रखकर कहता था—मस्यो त्रिवेल को जब यह सब मालूम होगा तो वे इन लोगों को मज़ा चखाएंगे। मैं उनके काम से जा रहा था...। वह और न जाने क्या-क्या बड़बड़ा रहा था।"

यह सुनकर सरदार चौंक पड़ा और बोला, "क्या कहा ? मस्यो त्रिवेल ? मालूम होता है, उसकी जेब में कोई गुप्त चिट्ठी है।"

सरायवाला बोला, ''जी हां, जब वह बेहोश हो गया तो मैंने यह काग़ज़ आपको दिखाने के लिए निकाल लिया था। लीजिए यह रही चिट्ठी।'' यह कहकर उसने चुराई हुई चिट्ठी सरदार को दे दी।

सरदार ने चिट्ठी देखकर कहा, ''ठीक है। लगता है त्रिवेल ने मुझे मारने के लिए ही इस लड़के को यहां भेजा था। लेकिन हो सकता है, ऐसी बात भी हो और यह अपने किसी काम से जा रहा हो। अच्छा, मेरा घोड़ा तैयार करो। मैं ज़रा उस अंग्रेज़ लेडी से मिलकर अभी आता हूं।''

उधर दार्ता की बेहोशी अब तक दूर हो गई थी। अचानक उसने सुना कि पास के कमरे से किसी के बातचीत करने की आवाज़ आ रही है। उत्सुकतावश वह कान लगाकर सुनने लगा। उसने सुना कि वही सरदार किसी स्त्री से कह रहा था, ''तुम अब इंग्लैंड चली जाओ और अगर ड्यूक लंदन से चले गए हों, तो तुम इसकी ख़बर मुझे दे देना। यह सन्दूक अपने पास रख लो। इसमें एक काग़ज़ है, जिसमें आगे के लिए सब कुछ लिखा हुआ है। लेकिन इस सन्दूक को तुम इंग्लैंड पहुंचकर ही खोलना। फ्रांस में इसे मत खोलना।''

फिर दार्ता ने देखा कि अचानक वह सरदार अपने घोड़े पर सवार होकर वहां से भाग निकला और उस स्त्री की गाड़ी दूसरी दिशा में चल दी।

दार्ता का मन हुआ कि वह सरदार का पीछा करे, लेकिन अभी उसके घाव अच्छे नहीं हुए थे और उसका घोड़ा भी इस हालत में नहीं था कि सरदार का पीछा कर सके। वह रात

उसने वहीं बिताई। उसके पिता ने उसे जो मरहम दिया था, उससे दो दिन में उसने अपने घाव ठीक कर लिए। फिर वह पेरिस जाने की तैयारी करने लगा।

अचानक दार्ता को अपनी चिट्ठी की याद आई। लेकिन चिट्ठी जेब से ग़ायब थी। वह तुरन्त अपनी तलवार निकालकर सरायवाले के पास पहुंचा और उससे चिट्ठी मांगने लगा। पहले तो सरायवाले ने आनाकानी की। लेकिन जब दार्ता ने अपनी तलवार उसकी छाती पर टिका दी तो वह कांपता हुआ बोला, "हुजूर माफ़ करें, आपकी चिट्ठी मेरे पास नहीं हैं। लेकिन मैं जानता हूं कि वह कहां है। दो दिन पहले जिस सरदार से आपकी लड़ाई हुई थी, वही उसे ले गया है। मेरे नौकर ने उसे आपकी जेब से चिट्ठी निकालते हुए देखा था।"

दार्ता ने दांत पीसकर कहा, "ठीक है, उसे इसकी सज़ा मिलेगी। पेरिस पहुंचकर मैं मस्यो त्रिवेल को सारा क़िस्सा बताऊंगा और वे तुम लोगों की ख़बर लेंगे।"

इसके बाद दार्ता अपना सामान बांधकर और घोड़े पर सवार होकर वहां से चल पड़ा। पेरिस पहुंचकर उसने पहला काम तो यह किया कि अपने मरियल घोड़े को सिर्फ़ तीन क्राउन में बेच दिया। फिर वह पैदल ही फ्रांस की राजधानी में दाख़िल हुआ। शहर में पहुंचकर उसने एक छोटा-सा मकान किराये पर लिया। दूसरे दिन वह अच्छे कपड़े पहनकर और कमर में तलवार लटकाकर मस्यो त्रिवेल से मिलने के लिए चल पड़ा।

दो

जब दार्ता ने मस्यो त्रिवेल की बैठक में प्रवेश किया तो उन्होंने मुस्कराकर दार्ता का स्वागत किया। दार्ता ने ज़मीन छूकर उन्हें प्रणाम किया। मस्यो त्रिवेल ने खुश होकर उसे आर्शीवाद दिया और इशारे से बैठने को कहा। फिर उन्होंने अपने सिपाहियों को आवाज़ दी, "ऐथोस ! पार्थस ! अरामिस ! ज़रा यहां आओ।"

उनकी आवाज़ सुनते ही दो सैनिक वहां आ पहुंचे। दार्ता इन दोनों को पहचान गया, क्योंकि मकान के बाहर वह इन दोनों को देख चुका था। उसके आने पर मस्यो त्रिवेल ने कहा, "क्या तुम लोगों को मालूम है कि कल शाम को सम्राट ने मुझे क्या हुक्म दिया है? उन्होंने कहा है कि अगर मुझे अपने तिलंगों की पलटन में किसी नये सिपाही को भरती करना हो तो उसे मैं कार्डिनल की टुकड़ी से ही लूं। कुछ समझे तुम लोग ?"

यह सुनकर उन दोनों सिपाहियों के चेहरे गुस्से से तमतमा

उठे। दार्ता को लगा कि उसे इस समय यहां नहीं खड़ा रहना चाहिए और इन लोगों को बातचीत करने देना चाहिए। लेकिन मस्यो त्रिवेल को जैसे उसकी उपस्थिति पर कोई एतराज़ नहीं था। वे कह रहे थे, "सम्राट का कहना ठीक है। जिन शाही सिपाहियों पर मुझे गर्व है, उन लोगों ने आज मुझे कहीं मुंह दिखाने का नहीं रखा। मेरी तिलंगा पलटन आज बदनाम हो गई है। कार्डिनल ने सम्राट को बताया है कि उसके बहादुर सिपाहियों ने तुम लोगों के कई साथियों को कल एक शराबख़ाने में दंगा-फ़साद के अपराध में गिरफ्तार किया है। मुझे तो बड़ा ताज्जुब है कि कार्डिनल ने तुम दोनों का और ऐथोस का भी नाम लिया है। ऐथोस कहां है ? मैंने तुम तीनों को यहां बुलाया था, लेकिन ऐथोस नहीं आया।"

अरामिस ने सिर झुकाकर कहा, "जी, ऐथोस बीमार पड़ गया है।"

मस्यो त्रिवेल नाराज़ होकर बोले, "बीमार हो गया है ! देखो, यह सब बेकार की बात है। कार्डिनल के सिपाहियों के हाथ मार खा लेना अच्छा मालूम नहीं होता। उन लोगों ने तुम्हारे सिपाहियों को पकड़ लिया और तुम लोग पीठ फेरकर भाग निकले । छिः ! छिः ! यह तो बड़ी बुरी बात है। दीवान के सिपाहियों ने सम्राट के सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया। वे लोग दो आदमी थे और तुम भी दो थे। लेकिन तुमसे कुछ नहीं बना ! मन होता है कि मैं अपने पद से इस्तीफ़ा दे दूं और तुम लोगों का सरदार न रहूं।"

यह सुनकर पार्थस बोला, "हुज़ूर, आपका कहना सही

है। यह ठीक है कि वे भी दो थे और हम भी दो थे। लेकिन जिस तरह उन लोगों ने हमें गिरफ्तार किया था, उसमें उनकी कोई बहादुरी नहीं है। उन्होंने चोरों की तरह हम पर हमला किया था। हमें अपनी तलवार तक निकालने का मौका नहीं मिला। फिर भी ऐथोस ने उनका मुकाबला करने की कोशिश की, लेकिन वह ज़ख़्मी हो गया। आपको किसी ने झूठमूठ ही बता दिया है कि हम लोगों ने उनके हमले का कोई जवाब नहीं दिया। सचाई तो यह है कि जब वे ज़बरदस्ती पकड़कर हमें ले जाने लगे, तो हमने रास्ते में ऐथोस को छुड़ा लिया और फिर हम लोग भाग निकले।''

फिर अरामिस ने कहा, ''और आपने यह भी सुना होगा कि मैंने ख़ाली हाथों ही उनमें से एक आदमी को ज़मीन पर दे मारा और उसकी तलवार छीनकर उससे उसको ठंडा कर दिया।''

मस्यो त्रिवेल आश्चर्य से बोले, ''अच्छा ! यह बात है ! मुझे तो किसी ने यह बताया ही नहीं। लगता है कार्डिनल ने सारा किस्सा बढ़ा-चढ़ाकर सम्राट को सुनाया है।''

इतने में अचानक पास का पर्दा उठा और तलवार के सहारे चलते हुए ऐथोस वहां आ पहुंचा। उसे गहरा घाव लगा था और बहुत खून बह रहा था, जिससे वह बहुत कमज़ोर हो गया था। उसे देखकर सभी लोग चौंक पड़े। मस्यो त्रिवेल आश्चर्य से बोले, ''ऐथोस, तुम !''

ऐथोस ने गम्भीर स्वर में कहा, ''जी हां, आपने मुझे बुलाया था न ? मुझे कुछ देरी हो गई; कहिए क्या हुक्म है ?''

मस्यो त्रिवेल ने प्रसन्न होकर कहा, ''मैं अभी तुम्हारे साथियों से कह रहा था कि सम्राट की तिलंगा पलटन के जवान रास्ते में मारपीट करने के लिए हैं। हम सम्राट के अंगरक्षक हैं !''

लेकिन ऐथोस की कमज़ोरी बढ़ती जा रही थी। वह अधिक देर तक खड़ा नहीं रह सका। उसके पांव लड़खड़ाने लगे और देखते-देखते वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। मस्यो त्रिवेल यह देखकर घबरा उठे और चिल्लाकर बोले, ''हाय, यह क्या ! जल्दी करो, किसी हकीम को बुलाओ !''

देखते-देखते उस कमरे में कई सिपाही आ पहुंचे और ऐथोस को संभालने लगे। हकीम पास ही रहता था। अरामिस और पार्थस ने बेहोश ऐथोस को उठाकर पास के कमरे में लिटा दिया। वहां हकीम उसका इलाज करने लगा।

इधर मस्यो त्रिवेल ने सब सिपाहियों को वहां से चले जाने को कहा। जब कमरा ख़ाली हो गया तो उन्होंने दार्ता को अपने पास बुलाया और उससे सारा किस्सा पूछने के बाद कहा, ''मुझे पता नहीं था कि तुम मेरे मित्र के लड़के हो। तुम तो मेरे लिए अपने बेटे के समान हो। अच्छा कहो, तुम्हें क्या कहना है ?''

दार्ता बोला, ''यहां आने के पहले मेरी यही एकमात्र इच्छा थी कि मैं आपके सिपाहियों में भरती हो जाऊं और एक शाही तिलंगे के रूप में काम करूं। लेकिन यहां आकर जो कुछ मैंने अपनी आंखों से देखा, उससे लगता है कि मैं शाही सेना में भरती होने के योग्य नहीं हूं।''

उसकी बात सुनकर मस्यो त्रिवेल ने कहा, "यह तो ठीक है कि सम्राट की शाही सेना में फ्रांस के चुने हुए बहादुरों को ही जगह दी जाती है। हर किसी को उसमें भरती नहीं किया जाता और भरती सम्राट की आज्ञा से ही होती है। इसके लिए यह ज़रूरी है कि कोई पहले सम्राट को अपनी बहादुरी का सबूत दे और फिर दो साल तक किसी सेना में भरती होकर लड़ाई में अपनी बहादुरी दिखाए। इसके बाद ही उसे शाही सेना की इस तिलंगा पलटन में जगह मिल सकती है।"

फिर कुछ देर सोचकर वे बोले, "मैं तुम्हें निराश नहीं करना चाहता। परन्तु सबसे पहले तुम्हें फ़ौजी तालीम लेनी पड़ेगी। उसमें भी सबको नहीं लिया जाता। बड़े-बड़े अमीरों के लड़के उसमें भरती होने के लिए तरसते रहते हैं। लेकिन मैं तुम्हें सैनिक विद्यालय में भरती करा दूंगा।"

यह सुनकर दार्ता का चेहरा उतर आया। उसे लगा कि जिस काम के लिए वह घर से निकला है, वह पूरा नहीं हो सकता। वह उदास स्वर में बोला, "क्या करूं महाशय, अब मुझे मालूम हुआ कि उस चिट्ठी को खोकर मैंने कितना नुकसान किया है। अगर वह चोरी न चली गई होती तो शायद आज मुझे इस तरह आपके यहां से खाली हाथ न लौटना पड़ता।"

मस्यो त्रिवेल ने आश्चर्य से पूछा, "कैसी चिट्ठी ? और तुम कहते हो कि वह चोरी हो गई? भला इतनी हिम्मत किसमें है कि मेरे नाम लिखी गई चिट्ठी को चुरा ले जाए !"

इस पर दार्ता ने सरायवाली घटना बता दी। उसकी बात सुनकर मस्यो त्रिवेल ने कहा, "अच्छा, यह बताओ, जिस सरदार

के बारे में तुम कह रहे हो, उसके दाहिने गाल पर कोई घाव का निशान तो नहीं था ?"

दार्ता याद करके बोला, "जी हां, आपने उसे ठीक पहचान लिया है। मुझे अच्छी तरह याद है कि उसके गाल पर घाव का निशान बना था। अगर एक बार भी वह मुझे मिल जाए तो मैं उसे अच्छी तरह मज़ा चखा सकता हूं।"

फिर दार्ता ने उन्हें बताया कि किस तरह उस सरदार से उसकी लड़ाई हुई थी। उसने यह भी बताया कि उस सरदार ने एक स्त्री को एक सन्दूक दिया था और कहा था कि इसमें एक ज़रूरी काग़ज़ है और इंग्लैंड पहुंचने के पहले सन्दूक को न खोला जाए। फिर उसने कहा, "अगर आप मुझे शाही पलटन में भरती नहीं करा सकते तो मुझपर एक कृपा कीजिए। मुझे उस सरदार का नाम और पता बता दीजिए। मैं उससे अपने अपमान का बदला लेना चाहता हूं !"

यह सुनकर मस्यो त्रिवेल कुछ गंभीर हो गए और बोले, "सुनो दार्ता, अभी जो कुछ तुमने मुझसे कहा है, उसे तुम किसी दूसरे आदमी के सामने मत कहना। यह मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही कह रहा हूं, वरना तुम किसी मुसीबत में फंस जाओगे। अगर उस सरदार से रास्ते में कभी तुम्हारी मुलाकात हो जाए, तो चुपचाप मुंह फेरकर निकल जाना। उससे झगड़ा मोल मत लेना।"

कुछ देर सोचकर मस्यो त्रिवेल ने आगे कहा, "अच्छा, अभी तुम जाओ। मैं तुम्हें एक चिट्ठी लिखकर देता हूं, जो तुम्हारे काम आएगी।" यह कहकर उन्होंने एक प्रमाण-पत्र

लिखा और उस पर अपनी मुहर लगा दी।

दार्ता जैसे ही चिट्ठी लेकर बाहर जाने लगा कि अचानक खिड़की के बाहर उसकी नज़र गई और वह उत्तेजित होकर बोला, "लो, मिल गया, वह रहा शैतान ! देखता हूं, अब वह किस तरह बचकर जाता है।" यह कहकर वह तेज़ी से बाहर की ओर दौड़ पड़ा।

मस्यो त्रिवेल ने उसे रोकने की कोशिश करते हुए पूछा, "कौन है, किसे देखा तुमने ?"

दार्ता बाहर निकलते हुए बोला, "वही आदमी है, वही जो मेरी चिट्ठी चुरा ले गया है !"

बाहर निकलते-निकलते दार्ता सीढ़ी पर एक सिपाही से टकरा गया। सिपाही लड़खड़ाकर नीचे जा गिरा। दार्ता बोला, "माफ़ करना भाई, मैं ज़रा जल्दी में था !

लेकिन इतने में ही उस सिपाही ने उछलकर उसके कुर्ते का गला पकड़ लिया। दार्ता ने देखा कि यह वही ऐथोस नाम का एक सिपाही था, जिसे अभी कुछ देर पहले त्रिवेल बेहोश हो जाने पर एक कमरे में हकीम के पास सुला आए थे। ऐथोस ने उसे डांटकर कहा, "लड़के मालूम होता है, तेरा दिमाग़ कुछ फिर गया है ! इस तरह किसी को धक्का मारकर तुम आसानी से बच निकलना चाहते हो ! लगता है, तुम्हें कुछ तमीज़ सिखानी पड़ेगी !"

"अगर मुझे जल्दी न होती तो मैं देखता कि कौन मुझे तमीज़ सिखा सकता है !" दार्ता ने क्रोध से कांपते हुए कहा !

ऐथोस बोला, "ठीक है, तुम अपना काम पूरा कर लो।

फिर अगर हिम्मत हो तो पादरियों के मठ के पास वाले मैदान में मुझसे मिलना। मैं बारह बजे तक तुम्हारी राह देखूंगा।"

"ठीक है, मैं तुमसे निबट लूंगा। मैं कोई कायर आदमी नहीं हूं !" यह कहते हुए दार्ता बाहर दरवाज़े पर आ पहुंचा।

दरवाज़े पर पार्थस खड़ा चौकीदार से बातें कर रहा था।

वे दोनों इस तरह खड़े थे कि उन दोनों के बीच में से एक आदमी आसानी से निकल सकता था। दार्ता ने उनके बीच से निकलने की कोशिश की, लेकिन उसकी तलवार की मूठ में अटककर पार्थस का कुर्ता फट गया। पार्थस नाराज़ होकर बोला, "बेवकूफ़ कहीं के ! क्या अन्धे हो गए हो ? देखकर नहीं चल सकते ?"

दार्ता बोला, "असल में ज़रा जल्दी में हूं, मुझे एक आदमी को पकड़ना है, वरना मेरी आंखें तुमसे ज्यादा अच्छी हैं।"

पार्थस गुस्से में कांपता हुआ बोला, "क्या बक रहा है, लड़के ! जानता नहीं है, तू किससे बात कर रहा है ! लगता है तुझे सिखाना पड़ेगा कि शाही तिलंगे से किस तरह बात करनी चाहिए !"

"रहने दो, तुम मुझे क्या सिखाओगे ! लेकिन अगर तुम मुझसे लड़ना ही चाहते हो तो कुछ देर बाद मैं तुमसे भी निबट सकता हूं।" दार्ता ने अकड़कर कहा।

"अच्छा, ऐसा ? तो फिर तुम मुझसे शाही बाग़ के सामने एक बजे मिलना !"

"ठीक है, मिल लूंगा !" कहते हुए दार्ता बाहर सड़क पर निकल आया और उसी तरफ़ दौड़ने लगा, जिधर उसने अपने दुश्मन को जाते हुए देखा था। लेकिन उसे देरी हो गई थी। वह आदमी वहां से जा चुका था। दार्ता ने ढूंढ़ने की बड़ी कोशिश की, लेकिन वह नहीं मिला।

अपने दुश्मन से बदला लेने का मौका चूक जाने पर दार्ता को बड़ा अफ़सोस हुआ। कुछ दूर आगे चलने पर उसने देखा

कि अरामिस नाम का एक दूसरा सिपाही, जिसे उसने मस्यो त्रिवेल की बैठक में देखा था, एक जगह खड़ा कुछ सिपाहियों से बातें कर रहा था। अरामिस भी फ़ौरन उसे पहचान गया। वह उससे कुछ नाराज़ था। उसे याद आया कि मस्यो त्रिवेल उसे डांट रहे थे, तब यह लड़का भी वहां मौजूद था।

लेकिन दार्ता के मन में ऐसी कोई बात नहीं थी। उल्टे वह अरामिस से अपनी जान-पहचान बढ़ाना चाहता था। उसने देखा कि अरामिस की जेब से एक रूमाल सड़क पर गिर गया है। जान-पहचान बढ़ाने का मौका देखकर दार्ता ने वह रूमाल उठा लिया और अरामिस को देते हुए कहा, "लीजिए, यह आपका रूमाल नीचे गिर पड़ा था।"

लेकिन अरामिस ने उसकी तरफ़ इस तरह घूरकर देखा जैसे उसने कोई अपराध किया हो। सचमुच अनजाने में दार्ता से अपराध हो गया था। बात यह थी कि अरामिस ने मज़ाक-मज़ाक में अपने पास खड़े एक सिपाही की जेब से रूमाल निकाल लिया था। वह उसे छिपाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन रूमाल ज़मीन पर गिर पड़ा था। अब उसकी चाल खुल गई थी। जब उसके साथी उसकी हंसी उड़ाते हुए वहां से चले गए तो उसने दार्ता से कहा, "क्यों लड़के, तुमको रूमाल छीनने के लिए किसने कहा था ? जानते हो, तुमने क्या कर डाला ?"

दार्ता ने आश्चर्य से कहा, "आप इस तरह बिगड़ क्यों रहे हैं ?"

"क्या हो गया, यह समझने की अक्ल तुम्हारे जैसे देहाती

गंवार में कहां से हो सकती है ?''

दार्ता को और भी बुरा लगा। वह बोला, ''तुम इस तरह गाली क्यों बक रहे हो ? आख़िर अपने को तुम समझते क्या हो ?''

अरामिस बोला, ''मैं जो कुछ अपने को समझता हूं, अगर वह जानना ही है तो तुम दोपहर में दो बजे मस्यो त्रिवेल की कोठी के सामने मिलना। वहीं मैं तुम्हें बताऊंगा !''

''ठीक है, मैं तुमसे भी निबट लूंगा !'' दार्ता ने अकड़कर कहा। इसके बाद दोनों अलग-अलग दिशाओं में चले गए।

तीन

इस तरह दार्ता ने शाही सेना के तीन तिलंगों से झगड़ा मोल ले लिया था। अब उसे उनमें से प्रत्येक के साथ दंगल लड़ना था। लेकिन पेरिस में दार्ता को कोई नहीं जानता था और न वह किसी को जानता था। दंगल या युद्ध का नियम यह है कि साथ में कोई जान-पहचान का आदमी चलना चाहिए, जो दंगल के मध्यस्थ का काम करे। लेकिन दार्ता को अकेले ही जाना पड़ा। वह लोगों से रास्ता पूछते हुए तेज़ी से चला जा रहा था। कुछ देर बाद वह पादरियों के मठ के सामने वाले मैदान में जा पहुंचा। उसके देखा कि वहां ऐथोस टहल रहा था। ठीक उसी समय मठ के घड़ियाल ने बारह का घंटा बजाया।

अभी ऐथोस का घाव पूरी तरह भरा नहीं था। वह उस पर पट्टी बांधे था। दार्ता के वहां पहुंचने पर उसने कहा, ''देखो भाई, मैंने अपने जिन दो मित्रों को आज दंगल में अपनी तरफ़ से पंच बनाया है, वे लोग अभी तक आए नहीं। इसलिए थोड़ी

देर हो जाएगी।''

दार्ता ने कहा, ''मेरा तो पेरिस में कोई दोस्त ही नहीं है, जिसे मैं अपना मध्यस्थ बना सकूं। मैं परसों ही पेरिस आया हूं और यहां सिर्फ मस्यो त्रिवेल को छोड़कर और किसी को नहीं जानता। मस्यो त्रिवेल मेरे पिता के मित्र हैं।''

इतने में पार्थस वहां आ पहुंचा। पार्थस को वहां देखकर दार्ता को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, ''क्या यही तुम्हारे पंच होंगे ?''

तब तक अरामिस भी वहां आ पहुंचा। ऐथोस ने कहा, ''हां, यही दोनों मेरी ओर से पंच हैं। क्या तुम्हें कोई आपत्ति है ?''

दार्ता कोई जवाब दे, इसके पहले ही ऐथोस ने कुछ गर्व के साथ कहा, ''क्या तुम्हें पता नहीं कि हम तीनों हमेशा साथ रहते हैं ? जहां हममें से एक आदमी जाएगा, वहां बाकी के दो भी ज़रूर जा पहुंचेंगे। पेरिस में तुम भी किसी से पूछ सकते हो कि ऐथोस, पार्थस और अरामिस किसी भी दिन अलग नहीं हो सकते। इसीलिए लोग हमें 'तीन तिलंगे' के नाम से जानते हैं।''

पार्थस और अरामिस भी दार्ता को वहां देखकर कुछ आश्चर्य में पड़ गए थे। ऐथोस ने उन लोगों से कहा, ''इसी नौजवान के साथ आज मुझे दंगल लड़ना है।''

पार्थस बोला, ''लेकिन मुझे भी तो इसी के साथ लड़ना है !''

दार्ता ने कहा, ''हां, लेकिन एक बजे से पहले नहीं !''

इसके बाद अरामिस बोला, ''मुझे भी तो इसी भले आदमी के साथ आज निबटना है। दो बजे हम दोनों दंगल में लड़ेंगे !''

अब तीनों मित्र बड़े चक्कर में पड़े। उन्होंने आपस में एक-दूसरे से पूछा कि वह दार्ता से क्यों लड़ना चाहता है। सबने एक-दूसरे को अपना-अपना कारण बताया।

अन्त में दार्ता ने उन तीनों से कहा, ''आप लोग मुझे उम्र में छोटा समझकर इस तरह निराश न हों। मैं सबसे लड़ना चाहता हूं। लेकिन मुझे सबसे पहले मस्यो ऐथोस से लड़ना है। अगर इसके हाथों मैं मारा गया तो आप लोगों से नहीं लड़ सकूंगा, इसलिए पहले ही मैं माफ़ी मांग लेता हूं। अच्छा आइए, अब मैं तैयार हूं।''

यह कहकर दार्ता ने तलवार निकाल ली। ऐथोस बोला, ''ठीक है, मैं तैयार हूं।''

दोनों तलवार निकालकर एक-दूसरे पर टूट पड़े। लेकिन अचानक उन लोगों ने देखा कि मैदान की दूसरी तरफ़ प्रधान मंत्री कार्डिनल के कुछ सिपाही अपने सरदार मस्यो गुसाक के साथ उधर ही आ रहे थे। उन्हें देखकर अरामिस और पार्थस ने ऐथोस से कहा, ''अरे, कार्डिनल के सिपाही आ रहे हैं ! जल्दी से अपनी तलवार म्यान में रख लो !''

लेकिन तब तक काफ़ी देर हो चुकी थी। कार्डिनल के सिपाहियों ने देख लिया था कि वे लोग सड़क पर दंगल लड़ रहे थे। अपने सैनिकों के साथ पास आकर गुसाक ने कहा, ''तुम लोगों ने फिर से सड़क पर मार-पीट शुरू की ? सम्राट की आज्ञा की तुम लोगों के लिए कीमत नहीं है ?''

गुसाक से तीनों तिलंगे बहुत चिढ़े हुए थे। अभी कल ही गुसाक से हाथापाई होने के कारण ऐथोस घायल हो गया था। वह ज़रा बेपरवाही से बोला, ''मस्यो, आप तो बड़े दयालु आदमी हैं। ज़रा-सा हम लोगों को लड़ लेने दीजिए। आप लोग ज़रा तमाशा ही देख लीजिए।''

गुसाक उसे डांटकर बोला, ''चुप रहो, बेकार की बकबक न करो ! हम लोग सम्राट के नौकर हैं और उनकी आज्ञा का पालन कर रहे हैं। तुम तलवार म्यान के अन्दर डालो और यहां से चलते बनो !''

इस पर अरामिस उसका मज़ाक बनाते हुए बोला, ''माफ़ कीजिएगा हुज़ूर, हम लोग भी सम्राट के नौकर हैं। आपको

तो मालूम ही है कि हम शाही सेना के सिपाही हैं। मस्यो त्रिवेल ने हमसे कहा है कि हम जो चाहें कर सकते हैं। इसलिए आप चुपचाप यहां से तशरीफ़ ले जाइए।''

यह सुनकर गुसाक और उसके सिपाहियों को बड़ा गुस्सा आया। वह बोला, ''अगर तुम लोग नहीं मानोगे तो हमें तुम पर हमला कर एक-एक की अक्ल ठीक करनी पड़ेगी !''

ऐथोस ने अकड़कर जवाब दिया, ''आख़िर तुम अपने को समझते क्या हो ! यह न समझना कि हम लोग डरकर भाग जाएंगे। तुम लोग पांच हो और हम सिर्फ़ तीन ही हैं, लेकिन फिर भी हम तुम्हें मज़ा चखाने का दम रखते हैं। अगर लड़ना चाहते हो तो आओ लड़ लो।''

देखते-देखते तीनों साथी तलवार निकालकर लड़ने के लिए तैयार हो गए। दार्ता ने सोचा कि इस समय मुझे इन्हीं लोगों का साथ देना चाहिए, क्योंकि ये लोग मस्यो त्रिवेल के आदमी हैं और ये मेरे मित्र हैं। इन लोगों से मुझे दंगल लड़ना है, लेकिन मैं बाद में लड़ता रहूंगा। वह भी तलवार निकालकर उन तीनों के पास जा खड़ा हुआ। उसने ऐथोस से कहा, ''आप लोग तीन नहीं, अपने को चार समझिए। मैं आपके साथ हूं ?''.

पहले तो उन लोगों ने दार्ता को समझा-बुझाकर इस झगड़े से अलग रहने को कहा, लेकिन जब दाता नहीं माना तो वे उसे साथ रखने के लिए राज़ी हो गए। ऐथोस ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, ''तुम सचमुच एक बहादुर नौजवान हो।''

गुसाक ने कड़ककर अपने सिपाहियों को हुक्म दिया, ''देखते क्या हो, इन चारों की तलवारें छीन लो और इनकी

अच्छी तरह से मरम्मत कर दो !"

देखते-देखते उसके सिपाही ऐथोस और उसके साथियों पर टूट पड़े। तीनों तिलंगे तो सिपाहियों से लड़ने लगे, लेकिन दार्ता सीधे गुसाक से भिड़ गया। अब उसे अपनी बहादुरी दिखाने का मौका मिला। उसने उछल-उछलकर तलवार चलाना शुरू किया। गुसाक भी बहादुर आदमी था, लेकिन वह वार चूक गया और दार्ता की तलवार से उसकी छाती में चोट आ गई। वह लड़खड़ाकर ज़मीन पर आ गिरा।

उधर ऐथोस और उसके साथी तिलंगों ने बाकी दूसरे सिपाहियों को ज़मीन पर गिरा दिया। उनमें से बेकरे नाम का सिपाही बड़ा बहादुर था। वह आख़िर तक लड़ता रहा। गुसाक ने जब अपनी हार होते देखी तो बेकरे को भी तलवार फेंक देने का हुक्म दिया। पहले तो बेकरे नहीं माना, लेकिन अन्त में उसे अपने सरदार का हुक्म मानना पड़ा। दार्ता और उसके साथियों ने गुसाक को और उसके दूसरे घायल साथियों को उठाकर मठ की सीढ़ियों पर रख दिया और फिर वे उनकी तलवार छीनकर मस्यो त्रिवेल की कोठी की ओर भाग निकले।

इस झगड़े की लहर सारे शहर में फैल गई। लोग तीन तिलंगों के साथ दार्ता की भी बहादुरी की चर्चा करने लगे। मस्यो त्रिवल ने खुद सम्राट को दार्ता की बहादुरी के बारे में बताने का निश्चय किया। वे दार्ता को शाही सिपाहियों की तिलंगा पलटन में भरती कराने के लिए उत्सुक थे।

सरकारी हुक्म को न मानकर रास्ते में मार-पीट करने के कारण मस्यो त्रिवेल ने तीनों तिलंगों को अपने पास बुलाकर

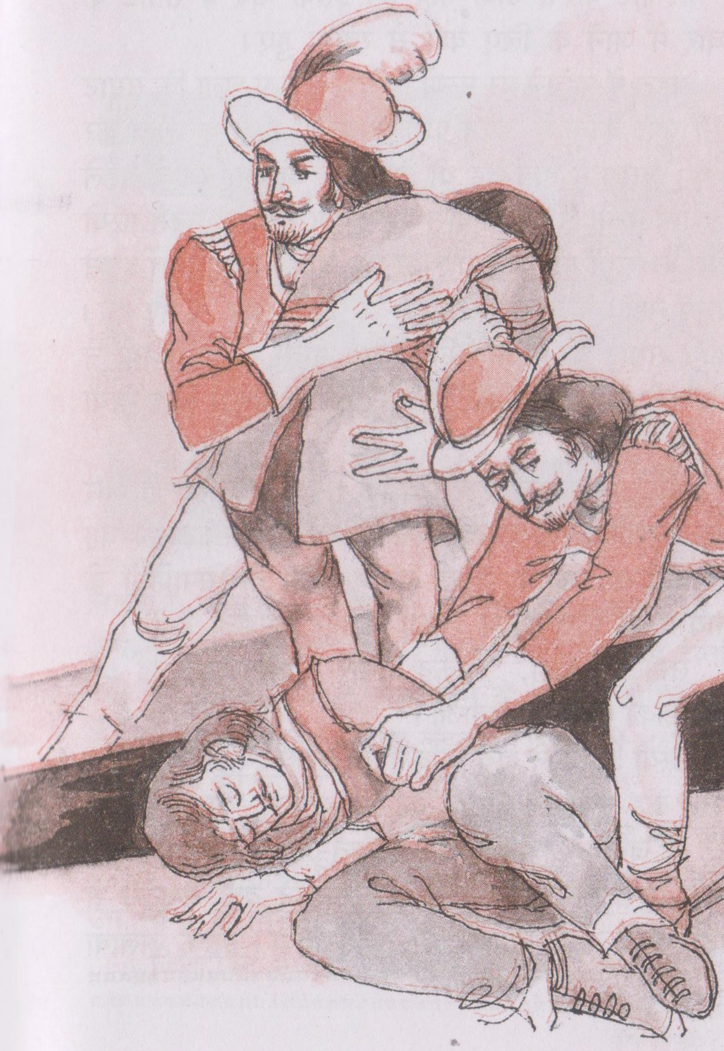

खूब डांटा-फटकारा, लेकिन मन में वे उनकी बहादुरी की प्रशंसा करते रहे। उन्होंने दार्ता को भी समझाया कि इस तरह सड़क पर मार-पीट करना ठीक नहीं है। इसके बाद वे सम्राट के दरबार में जाने के लिए वहां से रवाना हुए।

महल में पहुंचने पर मस्यो त्रिवेल को पता चला कि सम्राट किसी गुप्त बैठक में अपने प्रधानमन्त्री के साथ बातचीत कर रहे थे। असल में बात यह थी कि उनके यहां पहुंचने के पहले ही प्रधान मन्त्री सम्राट के पास पहुंच गया था और उनसे मस्यो त्रिवेल के लोगों की शिकायत कर रहा था। मस्यो त्रिवेल इससे घबराए नहीं। मौका मिलते ही उन्होंने भी सम्राट से भेंट की। उन्होंने सम्राट को बताया कि प्रधान मन्त्री के सिपाहियों ने ही आपके शाही सिपाहियों से जान-बूझकर झगड़ा मोल लिया था।

मस्यो त्रिवेल यह जानते थे कि सम्राट प्रधान मन्त्री और उनके सिपाहियों से नाराज़ रहते हैं। उन्होंने सम्राट को यह भी बता रखा था कि जनता प्रधान मन्त्री के सिपाहियों के बजाय शाही तिलंगों को ज़्यादा बहादुर समझती है।

सम्राट ने कहा, ''लेकिन असल में बात क्या हुई थी, ज़रा मुझको ठीक से बताओ।''

मस्यो त्रिवेल ने खूब नमक मिर्च लगाकर सम्राट को सारा किस्सा कह सुनाया। उन्होंने यह भी बताया, ''महाराज, इस झगड़े में जबकि प्रधान मन्त्री के सात-आठ सिपाही थे, तब आपके सिर्फ तीन सिपाही थे और उन्होंने बड़ी बहादुरी से प्रधान मन्त्री के सिपाहियों को खदेड़ दिया। इसके अलावा

महाराज, आपके तीन तिलंगों के साथ एक लड़का भी था, जिसने लड़ाई में बड़ी बहादुरी दिखाई। उसका नाम दार्ता है और वह शाही फ़ौज में भरती होने के लिए ही पेरिस आया है। सचमुच वह बहुत बहादुर लड़का है। उसे भी महाराज के तिलंगों में भरती कर लिया जाए।''

यह सुनकर सम्राट ने कहा, ''अच्छा, एक दिन उस लड़के को और उन तीनों तिलंगों को भी दरबार में ले आना। मैं उन लोगों से मिलना चाहता हूं।''

जिस दिन मिलना तय हुआ था, उस दिन ठीक समय

पर मस्या त्रिवेल दार्ता और अपने दूसरे तीनों सिपाहियों को लेकर दरबार में पहुंचे। इसी बीच दार्ता एक बार और अकेले ही प्रधान मन्त्री के सिपाहियों से लड़ चुका था। दरबार में पहुंचकर उसने सम्राट के पैरों में अपनी तलवार रख दी और सिर झुकाकर नमस्कार किया। सम्राट उसे देखकर बड़े खुश हुए। उन्होंने मस्यो त्रिवेल को हुक्म दिया कि इस नौजवान को शाही फौज में भरती कर लिया जाए।

चार

दार्ता की खुशी की सीमा नहीं थी। अब उसे शाही फ़ौज में जगह मिल गई थी। वह खूब मन लगाकर काम करने लगा।

एक दिन की बात है, दार्ता बाज़ार में घूम रहा था। अचानक उसकी नज़र एक स्त्री पर पड़ी, जिसे वह फ़ौरन पहचान गया। वह वही अंग्रेज़ स्त्री थी, जिसे उसने उस दिन सराय की खिड़की से देखा था। उस दिन यह उस सरदार से लकड़ी का एक सन्दूक लेकर और गाड़ी में बैठकर न जाने कहां चली गई थी। आज बाज़ार में उसे देखकर दार्ता को कुछ सन्देह हुआ और वह उसका पीछा करने लगा। कुछ दूर आगे जाकर वह स्त्री एक घोड़ा गाड़ी में जा बैठी। दार्ता ने सुना कि उस स्त्री ने कोचवान को सन्त जर्मेयन मार्ग पर गाड़ी ले चलने के लिए कहा।

दार्ता फौरन अपना घोड़ा ले आया। कुछ ही देर में सन्त जर्मेयन मार्ग पर उसने गाड़ी का पीछा करना शुरू किया। उसने देखा कि गाड़ी के साथ-साथ एक घुड़सवार भी चल रहा था।

दार्ता ने कुछ पास जाकर सुना, वे लोग आपस में अंग्रेज़ी में बातचीत कर रहे थे। दार्ता की समझ में कुछ नहीं आया। लेकिन इतना ज़रूर समझ गया कि वह स्त्री बहुत नाराज़ थी और घुड़सवार हंस-हंसकर उसकी बात टालता जा रहा था।

दार्ता ने सोचा कि इन लोगों से जान-पहचान किए बिना काम नहीं चलेगा। उसने उसने गाड़ी के पर्दे के पास मुंह ले जाकर कहा, ''देवी जी, आपको मेरी सेवा की ज़रूरत हो तो मैं तैयार हूं। लगता है, आप इस घुड़सवार से नाराज़ हैं। वह आपको तंग कर रहा है। आप कहिए तो मैं इसको मार भगाऊं।''

गाड़ी के साथ-साथ एक दूसरे आदमी को चलते देखकर वह अंग्रेज़ महिला चौंक पड़ी और फ्रांसीसी भाषा में बोली, ''बहादुर नौजवान, तुम मेरी मदद करना चाहते हो, यह जानकर मुझे खुशी हुई। लेकिन यह घुड़सवार मेरा भाई न होता तो मैं ज़रूर तुम्हारी मदद से लाभ उठाती।''

दार्ता लज्जित होकर बोला, ''माफ़ कीजिएगा, मुझे यह नहीं मालूम था कि ये आपके भाई हैं।''

तब तक उस घुड़सवार ने दार्ता की बात सुन ली। वह उसे डांटकर बोला, ''बेवकूफ लड़के, क्यों अपनी जान गंवाना चाहता है, चल अपना रास्ता देख !''

दार्ता का गुस्सा आ गया। वह उसको जवाब देना ही चाहता था कि इतने में उस अंग्रेज़ महिला ने अपने भाई से कहा, ''अच्छा, तुम इससे बातें करो, मैं घर चलती हूं।'' फिर उसने कोचवान से कहा, ''कोचवान, ज़रा तेज़ी से घर चलो।''

गाड़ी आगे बढ़ गई और सड़क पर दोनों घुड़सवार पास-पास चलने लगे। उस घुड़सवार ने दार्ता से कहा, ''तुम यहां से जाते क्यों नहीं, मेरे साथ क्यों चल रहे हो? जानते नहीं हो, मेरा गुस्सा कितना बुरा है। चुपचाप यहां से चले जाओ, वरना अभी मैं तुम्हारी अक्ल ठीक कर दूंगा।''

दार्ता ने हंसकर कहा, ''यही तो मैं चाहता हूं। तुम मेरी अक्ल ठीक करना चाहते हो और मैं देखना चाहता हूं कि तुममें कितनी अक्ल है। इस समय तुम्हें फुरसत न हो तो आज शाम

को छः बजे लक्सेम्बर्ग बाग के पीछे मुझसे मिल लेना। वहीं तलवारों के सहारे हम एक-दूसरे की अक्ल ठीक करेंगे।"

उस घुड़सवार ने कुछ आश्चर्य से और कुछ चिढ़कर दार्ता की तरफ़ देखा और कहा, "लगता है, तुम्हारा दिमाग़ कुछ फिर गया है, वरना तुम मुझसे, शेफील्ड के नवाब लार्ड विण्टर से, इस तरह अकड़कर बात न करते। ठीक है, मैं शाम को तुमसे उसी जगह मिलूंगा। अपने दो-एक दोस्तों को साथ लेते आना ताकि हाथ-पांव टूटने पर वे तुम्हें लादकर पहुंचा सकें।

दार्ता ने कहा, "यह शाम को देखा जाएगा कि हाथ-पांव किसके टूटते हैं। ख़ैर, आपने अपना परिचय दे दिया है तो मैं भी अपना परिचय दे दूं—मेरा नाम दार्ता है। मैं गेस्कन गांव का रहने वाला हूं। आजकल मस्यो त्रिवेल के नेतृत्व में शाही फ़ौज में काम कर रहा हूं। मैं आपके तीन दोस्तों को साथ लेकर शाम को आपसे मिलूंगा।" यह कहकर दार्ता ने अपना घोड़ा वापस सड़क की ओर मोड़ लिया।

शाम को ठीक समय पर दार्ता अपने तीनों साथियों को लेकर लक्सेम्बर्ग बाग के पीछे पहुंच गया। वहां लार्ड विण्टर अपने साथ तीन अंग्रेज़ योद्धाओं को लेकर पहले से तैयार खड़े थे।

दोनों तरफ़ के लोगों ने पहले एक-दूसरे से परिचय किया और फिर कायदे के मुताबिक लड़ाई छेड़ दी। दार्ता की तरफ़ से ऐथोस, अरामिस और पार्थस जमकर लड़ रहे थे। देखते-देखते लार्ड विण्टर के साथियों के पैर उखड़ गए।

दार्ता लार्ड विण्टर से भिड़ा हुआ था। दार्ता ने देखा कि

विण्टर बुरी तरह थक गए हैं। उसने अचानक उछलकर वार किया और लार्ड विण्टर की तलवार के दो टुकड़े कर दिए। वे उसके वार को संभाल नहीं सके और लड़खड़ाकर ज़मीन पर आ गिरे। दार्ता ने लपककर अपनी तलवार उनकी छाती पर टिका दी और कहा, "मैं चाहूं तो इसी क्षण आपकी जान ले सकता हूं, लेकिन आपकी सुन्दर बहन का ख्याल करके मैं आपको छोड़ देता हूं!"

लार्ड विण्टर उसकी बहादुरी को देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने उठकर दार्ता को गले से लगा लिया और उसे खूब शाबासी दी। इस लड़ाई में सिर्फ एक अंग्रेज़ मारा गया था। लार्ड विण्टर ने दार्ता से कहा, "दार्ता, मैं तुम्हारी बहादुरी पर बहुत खुश हूं। तुम्हारे दूसरे साथी भी बहादुरी से लड़े। तुम आज मेरी कोठी पर आना। मैं अपनी बहन से तुम्हारा परिचय कराऊंगा। वह तुमसे मिलकर बहुत खुश होगी। तुम्हें मालूम ही होगा कि राजदरबार में उसका बड़ा मान है।"

दार्ता बोला, "ठीक है, मैं ज़रूर आपके घर आऊंगा। आपने मेरे तीन साथियों की तारीफ़ की है, लेकिन आपके साथी भी कम बहादुर नहीं हैं। हम लोगों को अफ़सोस है कि आपका एक साथी मारा गया।" इसके बाद सब लोग वहां से विदा हो गए।

पांच

घर लौटकर दार्ता ने अच्छी तरह स्नान किया और सुन्दर पोशाक पहनकर वह लार्ड विण्टर की कोठी के लिए रवाना हो गया। जब वह वहां पहुंचा तो लार्ड ने उसका स्वागत किया, फिर बैठक में ले जाकर अपनी बहन से उसका परिचय कराया।

उस अंग्रेज़ महिला का नाम था लेडी केलरिक। लार्ड विण्टर ने लेडी केलरिक से कहा, ''मेरे इस बहादुर मित्र ने अपने हाथ में होने पर भी मुझे ज़िन्दा छोड़ दिया। मैंने इसे इसीलिए यहां बुलाया है कि तुम इससे मिलकर खुश होगी।''

दार्ता ने देखा कि उन लोगों ने एक बन्दर पाल रखा था। बन्दर को पुचकारते हुए लेडी केलरिक ने मुस्कराते हुए कहा, ''दार्ता, तुमसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई। तुम्हारा जब मन हो, तुम हमारी कोठी पर आ सकते हो। तुम्हारे जैसे बहादुर नौजवान का हम अंग्रेज़ लोग बहुत आदर करते हैं।''

इसके बाद लार्ड विण्टर उसे आज की लड़ाई का किस्सा सुनाने लगे। दार्ता को यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि

लेडी केलरिक उनकी बातों को सुन तो रही थी, लेकिन वह कुछ प्रसन्न नहीं मालूम होती थी। बड़ी मुश्किल से वह अपनी चिढ़ छिपाने की कोशिश कर रही थी।

लार्ड विण्टर ने दार्ता को मेज़ के पास बुलाया और शराब का जाम पीने को दिया। वहीं दीवाल के पास लगे एक आईने में लेडी केलरिक की आकृति दिखाई दे रही थी। दार्ता उसके चेहरे को ग़ौर से देखने लगा। लेकिन लेडी को यह नहीं मालूम था कि दार्ता की नज़र उसके चेहरे पर है। दार्ता ने देखा कि लेडी के चेहरे पर हिंसा का भाव स्पष्ट था। वह बहुत घृणा से उसकी तरफ़ देख रही थी।

थोड़ी देर बाद एक नौकरानी ने आकर लार्ड विण्टर को कुछ कहा और वे वहां से उठकर जाते हुए दार्ता से कहते गए, "तुम ज़रा मेरी बहन के पास बैठो, मैं अभी थोड़ी देर में आता हूं।"

दार्ता लेडी केलरिक से बातचीत करने लगा। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस बीच लेडी ने अपने चेहरे का भाव बिलकुल बदल दिया था और अब वह बहुत शांत दिखाई दे रही थी। बातचीत में उसने दार्ता को बताया कि लार्ड विण्टर उसके भाई नहीं हैं बल्कि उसके पति के बड़े भाई हैं, यानी उसके जेठ हैं। उसके पति की कुछ दिन पहले मृत्यु हो गई थी। उसके एक बच्चा भी था।

दार्ता को लगा कि यह सब बताते हुए भी लेडी केलरिक उससे कुछ छिपाने की कोशिश कर रही थी। पूरी बातचीत ख़त्म होने के बाद दार्ता को लगा कि इस स्त्री के भाव चाहे

जो कुछ हों, लेकिन यह मेरी भलाई ही चाहती है और मेरे ख़िलाफ़ यह कोई काम नहीं करेगी।

इसके बाद तो दार्ता अक्सर लेडी केलरिक से मिलने जाने लगा। वहां लार्ड विण्टर से भी उसकी मुलाकात होती थी। लेकिन उसके स्वागत का सारा भार लेडी केलरिक पर ही था। दार्ता यह बिलकुल भूल चुका था कि पहले ही दिन लेडी केलरिक ने नज़र बचाकर उसको बहुत घृणा से देखा था। बात भी असल में यही थी। लेडी मन से दार्ता को बिलकुल नहीं चाहती थी, क्योंकि वह प्रधान मंत्री की जासूस थी। इसके अलावा उसे एक बात की और चिढ़ थी, वह यह कि दार्ता ने उस दिन लड़ाई में विण्टर की हत्या नहीं की थी। लेडी की इच्छा यही थी कि किसी तरह लार्ड विण्टर की मृत्यु हो जाए और वह उसकी सारी सम्पत्ति को हथिया ले।

इधर दार्ता का यह हाल था कि उस पर लेडी का बहुत अधिक असर होता जा रहा था। वह मन-ही-मन उसे चाहने लगा था। लेकिन ऐथोस की नज़र से यह बात छिपी न रह सकी। उसे मालूम था कि लेडी किस प्रकार की स्त्री है और वह दार्ता के जीवन को बर्बाद कर देना चाहती है। दार्ता के साथियों ने उसको समझाने की बड़ी कोशिश की, लेकिन दार्ता के साथियों ने उसको समझाने की बड़ी कोशिश की, लेकिन दार्ता हर बार उनकी बात को हंसी में टाल देता था। इस समय अगर उनके भाग्य ने उनकी मदद न की होती तो वह पूरी तरह से उस दुष्ट स्त्री के पंजे में फंस जाता।

जब लेडी ने समझ लिया कि दार्ता अच्छी तरह से उसकी

मुट्ठी में आ गया है और उस पर मुग्ध है तो उसने धीरे-धीरे अपना जाल फैलाना शुरू किया। इस षड्यंत्र में उसने अपनी एक विश्वासपात्र नौकरानी केटी से मदद ली। लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि पहले दिन जब केटी ने दार्ता को देखा था तो उसी समय से वह उसको चाहने लगी थी। उसने दार्ता की बहादुरी के क़िस्से भी सुन रख थे।

केटी को यह पता लगते देर नहीं लगी कि लेडी केलरिक ने दार्ता की हत्या का षड्यंत्र रचा है। वह बड़ी बेचैनी से ऐसे मौके की तलाश में थी कि समय रहते ही दार्ता को सब कुछ बता सके। और एक दिन उसे मौका मिल गया। उस दिन दार्ता कोठी पर आया तो लेडी केलरिक कहीं गई हुई थी। उसकी नौकरानी केटी दार्ता को एक कमरे में ले गई और उसने दार्ता से कहा, "लेडी मेरी मालकिन है, लेकिन फिर भी मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि आप जल्दी ही उससे सम्बन्ध तोड़ दें। वह आपके ख़िलाफ़ षड्यंत्र रच रही है।"

पहले तो दार्ता को उसकी बात बहुत बुरी लगी, लेकिन जब उसने लेडी केलरिक के हाथ की एक चिट्ठी दार्ता को दिखाई तो दार्ता अचम्भे में पड़ गया। यह चिट्ठी एक सरदार को लिखी गई थी, जिसमें उसके प्रति बहुत प्रेम प्रकट करते हुए लेडी केलरिक ने लिखा था कि वह तुरन्त उससे मिलने के लिए चला आए, क्योंकि उसने दार्ता नाम के लड़के को ढूंढ लिया है।

इतने में मकान के दरवाज़े पर एक गाड़ी रुकी। केटी ने देखा कि उसकी मालकिन गाड़ी से उतरकर घर में आ रही

है। उसने दार्ता को कुछ देर के लिए छिपे रहने के लिए कहा और वह दौड़ती हुई वहां से चली गई। दार्ता उसी कमरे में छिपा रहा।

कुछ देर बाद उसने सुना कि पास के कमरे में लेडी

केलरिक केटी के साथ बातचीत कर रही थी। उसकी बात से दार्ता को लगा कि केटी ठीक कह रही थी। कुछ देर बाद उसने सुना कि लेडी केलरिक कह रही थी, "चिट्ठी पहुंचा आई न? वह बेवकूफ सिपाही दार्ता आज अभी तक नहीं आया। वह समझता है कि मैं उससे प्रेम करती हूं। लेकिन उसे पता नहीं कि मुझे उससे कितनी घृणा है। उसने लार्ड विण्टर को ज़िन्दा छोड़कर मेरी मेहनत पर पानी फेर दिया।"

यह सुनकर भी दार्ता चुपचाप वहां छिपा रहा। वह वहां से भागा नहीं। जिस जाल में लेडी ने उसको फंसाने की कोशिश की थी, उसी जाल में उसने खुद लेडी को फंसा दिया। वहां रुककर उसने बाद में केटी से कई गुप्त चिट्ठियां प्राप्त की और सारी बात का पता लगाया।

एक दिन दार्ता को पता चला कि लेडी केलरिक ने उस अज्ञात सरदार को मिलने के लिए बुलाया है जो उसकी हत्या करने वाला था। उस दिन रात को लेडी केलरिक जब निश्चित समय पर उस व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रही थी, तब अचानक दार्ता उसके सामने जा खड़ा हुआ। यह देखकर पहले तो लेडी बहुत चकराई, लेकिन फिर उसने ऐसा मुंह बनाया जैसे वह दार्ता के आने की राह देख रही थी और उसके आने पर उसे बड़ी खुशी हुई थी।

लेकिन दार्ता उसकी बातों में नहीं आया। उसने लेडी को बता दिया कि वह सब कुछ जानता है। उन गुप्त चिट्ठियों को लेडी के सामने रखते हुए वह बोला, "क्यों, तुमने मेरी हत्या कराने के लिए ही उस सरदार को यहां बुलाया था न ?

आज तुम उसी की तो राह देख रही हो ?"

लेडी केलरिक ने जब यह देखा कि उसकी सारी चाल खुल गई तो वह मारे शर्म और गुस्से के पागल हो उठी। अचानक वह एक छुरी निकालकर दार्ता पर टूट पड़ी। लेकिन दार्ता पलक मारते ही उछलकर अलग जा खड़ा हुआ और अपनी तलवार निकालकर बोला, "ख़बरदार ! तुम स्त्री हो, वरना अभी मैं तुम्हें इसका जवाब देता !"

लेडी केलरिक चिल्ला-चिल्लाकर अपने नौकरों को बुलाने लगी। लेकिन दार्ता इतना मूर्ख नहीं था। वह तुरन्त वहां से भाग निकला। इस तरह वह उस दुष्ट स्त्री के पंजे से बच सका।

छह

इन्हीं दिनों फ्रांस में ज़ोर-शोर के साथ लड़ाई की तैयारी होने लगी। मस्यो त्रिवेल को भी अपनी सेना के साथ युद्ध में भाग लेने के लिए जाना पड़ा। इस प्रकार दार्ता के जीवन में एक नये अध्याय की शुरुआत हुई।

लेडी केलरिक के साथ आख़िरी मुलाकात होने के पन्द्रह दिन बाद ही दार्ता को पेरिस छोड़कर रणक्षेत्र की ओर चल देना पड़ा।

कई साल इंग्लैंड और फ्रांस के बीच लड़ाई छिड़ी हुई थी। फ्रांस ने अपने लगभग सभी बन्दरगाह अंग्रेज़ों से छीन लिये थे, लेकिन अब भी रोचल नाम का बन्दरगाह अंग्रेज़ों के हाथ में था। वहीं युद्ध चल रहा था। उस समय फ्रांस में सम्राट तेरहवें लुई का शासन था। कार्डिनल रिचल उसके प्रधान मंत्री थे। कार्डिनल ने इस युद्ध में बड़ा नाम कमाया। इतिहासकारों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की है।

दुश्मन के पास फ्रांस में प्रवेश करने का एक ही रास्ता रह गया था और वह था रोचल बन्दरगाह। दुश्मन के इसी रास्ते को रोकने के लिए कार्डिनल ने अपनी फ़ौज वहां जमा की थी।

अंग्रेज़ी फ़ौज के सेनापति का नाम था ड्यूक ऑफ़ बकिंघम। युद्ध शुरू होने पर अंग्रेज़ी सेना फ्रांसीसी सेना पर टूट पड़ी। फ्रांसीसी सेना का सेनापति 'संत मार्टिन' नामक एक किले में अपनी फ़ौज को बचाकर ले आया। उसके दूसरे सैनिकों ने 'लाप्रि' नामक एक दूसरे छोटे किले में अड्डा जमाया।

कुछ दिन बाद दार्ता की फौज भी फ्रांसीसी सेना की मदद के लिए रणक्षेत्र में पहुंच गई। अंग्रेज़ सेना दोनों किलों पर आक्रमण करती थी, लेकिन अभी तक उन पर कब्ज़ा नहीं कर पाई थी।

इसी बीच एक दिन सम्राट के भाई, आर्लियन्स के ड्यूक, सेना के निरीक्षण के लिए वहां पहुंचे। जब वे पलटन की सलामी ले रहे थे और दार्ता के पास पहुंचे तो सेनानायक ने ड्यूक को कुछ करते हुए दार्ता की तरफ़ संकेत किया। फिर ड्यूक की आज्ञा से दार्ता को उनकी छावनी में बुलाया गया। दार्ता की समझ में यह नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। इतने सारे सिपाहियों को छोड़कर सिर्फ़ उसे ही क्यों बुलाया जा रहा है।

जब वह निश्चित समय पर ड्यूक के ख़ेमे में हाज़िर हुआ तो सेनानायक ने उससे कहा, "एक बहुत मुश्किल काम आ पड़ा है, जिसे तुम्हारे जैसा कोई बहादुर आदमी ही पूरा कर सकता है। मैंने ड्यूक को तुम्हारे बारे में बताया था। इसीलिए वे तुमसे मिलना चाहते हैं।"

भला दार्ता के लिए इससे बढ़कर खुशी की और क्या बात हो सकती थी ! बात यह थी कि अंग्रेज़ों ने एक किले पर घेरा डाल रखा था और फ्रांसीसी सेना के लिए उस गढ़ को जीतना ज़रूरी था। तभी वह आगे बढ़ सकती थी। इसलिए यह पता लगाना था कि दुश्मन ने किले के आसपास घेरे का कैसा इन्तज़ाम किया है। यह एक ज़ोखिम का काम था।

इसके लिए दार्ता ने अपने चार साथियों को चुना और

फिर वह अपने काम पर निकल पड़ा। दो सिपाही उसके साथ थे और दो उसके पीछे आ रहे थे।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर कभी पेट के बल और कभी घुटनों के बल चलते हुए वे लोग आगे बढ़ने लगे। जब वे लोग किले से सौ गज़ दूर रह गए तो दार्ता ने पीछे मुड़कर देखा कि पीछे आने वाले दो सिपाही ग़ायब हो गए थे। उसने सोचा कि शायद वे लोग डरकर भाग गए हैं। वह दो सिपाहियों को साथ लेकर आगे बढ़ा।

किले के दरवाज़े के पास जाने पर उन लोगों ने देखा कि वहां कोई नहीं था। वे लोग धीरे-धीरे दरवाज़े में घुसने की कोशिश करने लगे कि अचानक एक धड़ाका हुआ और सामने से गोलियां चलने लगीं। दार्ता के साथी एक पत्थर की आड़ में छिप गए। इतना उन्हें मालूम हो गया था कि किले के दरवाज़े पर कोई पहरेदार नहीं है, लेकिन अन्दर दोनों तरफ़ सिपाही बन्दूकें लेकर छिपे बैठे हैं।

इतना जान लेने के बाद दार्ता फ़ौरन वहां से अपने साथियों के साथ वापस लौट चला, लेकिन अचानक गोलियां चलीं और उसके दोनों साथी मरकर ज़मीन पर गिर पड़े। दो कदम आगे बढ़ने पर अचानक सामने से एक गोली सनसनाती हुई आई और दार्ता के सिर पर से होकर निकल गई। दार्ता को बड़ा आश्चर्य हुआ कि दुश्मन तो पीछे है और सामने से उन पर कौन गोली चला रहा है। वह फ़ौरन इस तरह ज़मीन पर गिर पड़ा जैसे मर गया हो।

कुछ देर बाद उसने देखा कि सामने से वे ही दो सिपाही

चले आ रहे थे, जो उसका साथ छोड़कर भाग गए थे। पास आने पर उसमें से एक सिपाही बोला, "चलो, हम लोग लौट चलें और कह देंगे कि दार्ता दुश्मन की गोली से मारा गया। हम लोगों ने लेडी का काम पूरा कर दिया।"

यह सुनते ही दार्ता बिजली की तेज़ी से उछलकर खड़ा हो गया और तलवार निकालकर उन ग़द्दार सिपाहियों पर टूट पड़ा। उनमें से एक मौका पाकर दुश्मन से मिलने के लिए किले की ओर भागने लगा। लेकिन किले में से एक गोली आई और उसने उस सिपाही को वहीं ढेर कर दिया। जब दार्ता ने दूसरे सिपाही को ज़मीन पर पटककर अपनी तलवार उसकी छाती पर लगा दी, तो वह गिड़गिड़ाकर बोला, "मुझे मत मारो, मुझपर दया करो। मेरा कोई दोष नहीं है। तुम्हारी हत्या करने के लिए रुपये तो मेरे साथी को मिले थे। उसको एक अंग्रेज़ औरत ने कुछ रुपये दिए थे और कहा था कि अगर तुम दार्ता की हत्या कर दोगे तो तुम्हें एक सौ मोहरें इनाम में मिलेंगी। अब भी उसकी जेब में उस अंग्रेज़ औरत की चिट्ठी रखी होगी।"

दार्ता ने उसको माफ़ कर दिया और फिर किले के सामने मरे पड़े उसके साथी के पास जाकर वह उसके कपड़ों में चिट्ठी की खोज करने लगा। जब चिट्ठी उसके हाथ न लगी तो वह उसकी लाश को कंधे पर उठा लाया और एक गड्ढे में बैठकर उसकी तलाशी लेने लगा। अन्त में उसकी कमर में एक चिट्ठी मिली, जो लेडी केलरिक के हाथों लिखी गई थी। दार्ता ने चिट्ठी को संभालकर अपनी जेब में रख लिया। फिर वह दूसरे

सिपाही को साथ लेकर वापस अपनी छावनी में लौट आया। सम्राट के भाई ने उसको अपने पास बुलाया और खूब शाबाशी दी।

सात

कुछ दिनों बाद एक दिन की बात है कि दार्ता अपने ख़ेमे में बैठा था। इतने में एक आदमी एक चिट्ठी लेकर उसके पास पहुंचा। यह चिट्ठी तिलंगा पलटन के रसोइये ने दार्ता के नाम लिखी थी। इसमें उसके साथ तीनों तिलंगों के हाल लिखे थे। उसमें लिखा था कि ऐथोस, पार्थस और अरामिस युद्ध-क्षेत्र की तरफ आगे बढ़ रहे थे। रास्ते में एक जगह उन्होंने कहीं कुछ गड़बड़ी की थी, जिसमें कुछ दिनों के लिए उनको जेल में बंद कर दिया गया था। इस रसोइये का नाम था गोदो। उसने अंत में लिखा था, 'लेकिन फिर भी आपके साथी तिलंगे आपको भूले नहीं हैं। उन्होंने आपके लिए बारह बोतल शराब भेंट के रूप में भेजने को कहा है, जिसे मैं इस आदमी के हाथ आपके पास भेज रहा हूं।''

इस खुशी में दार्ता ने दूसरे दिन अपने ख़ेमे में अपने कुछ साथियों को दावत पर बुलाया। फलांशे नाम के उसके रसोइये ने बड़ा अच्छा खाना बनाया था। जिस ग़द्दार सिपाही को दार्ता ने माफ़ कर दिया था, वह भी अब दार्ता का सेवक बन गया था। उसका नाम था मांट। फलांशे और मांट ने दावत का बड़ा अच्छा इन्तज़ाम किया।

जैसे ही लोग भोजन की टेबल पर बैठे कि अचानक कुछ हल्ला हुआ और ऐथोस, पार्थस और अरामिस दार्ता के ख़ेमे में आ घुसे। बात यह थी कि सम्राट की फ़ौज भी प्रधान मंत्री की मदद के लिए वहां आ पहुंची थी। उसके साथ शाही तिलंगा पलटन भी थी। दार्ता अपने साथियों से मिलकर बड़ा खुश हुआ। वह बोला, ''वाह, तुम लोग बड़े मौके से आए। चलो, ख़ाना तैयार है, और तुम लोगों की भेजी हुई शराब की बोतलें

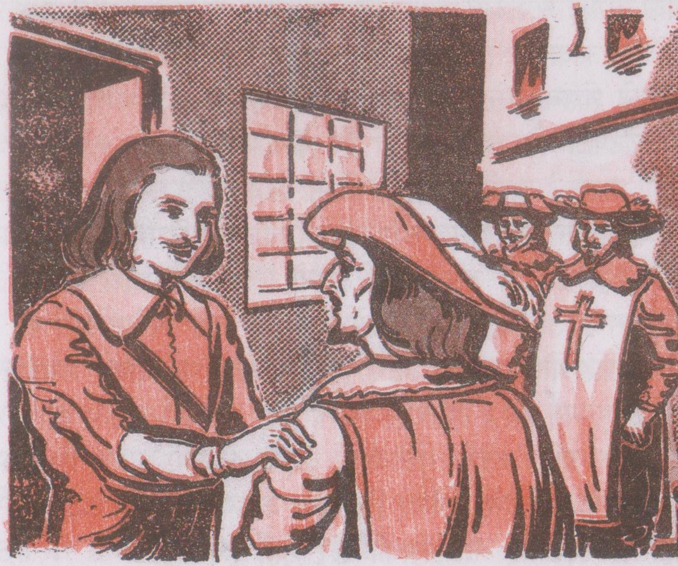

भी मौजूद हैं।''

उसकी बात सुनकर तीनों तिलंगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उनमें से किसी ने भी उसके लिए शराब नहीं भेजी थी। जब दार्ता ने उन लोगों को चिट्ठी की बात बताई तो मालूम हुआ कि चिट्ठी जाली थी। अरामिस ने फ़ौरन चिट्ठी देखकर कहा, ''यह चिट्ठी रसोइये के हाथ से लिखी हुई हो ही नहीं सकती। मैं उसकी लिखावट पहचानता हूं। इसके अलावा इसमें लिखा है कि हम लोगों को कैद कर लिया गया है। भला हमको कैद करने की हिम्मत किसमें है!''

यह सुनकर दार्ता का चेहरा मारे गुस्से से लाल हो गया। अब उसकी समझ में आया कि वह सारा षड्यन्त्र उसी अंग्रेज़ स्त्री का रचा हुआ था। अन्दर जाकर देखा कि फलांशे और मांट ने शराब पी ली थी और उसके ज़हर के कारण वे ज़मीन पर छटपटा रहे थे। कुछ ही देर में दोनों की मृत्यु हो गई।

दार्ता ने सारी शराब नाली में फिकवा दी और मेहमानों को हाथ जोड़कर क्षमा मांगते हुए विदा कर दिया। जब सब लोग चले गए तो अपने साथी तीनों तिलंगों के साथ बैठकर वह इस बात पर विचार करने लगा कि उस अंग्रेज़ स्त्री से किस तरह पीछा छुड़ाया जाए, क्योंकि वह हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गई थी। अन्त में सबने यह तय किया कि दार्ता को एक बार उससे मुलाकात करनी चाहिए और उससे साफ-साफ कह देना चाहिए कि अगर वह फ़ौरन फ्रांस छोड़कर यहां से नहीं गई, तो उसकी खैर नहीं है।

आठ

रोचल का घेरा ख़त्म होने के बाद अंग्रेज़ी फ़ौज के सेनापति ड्यूक ऑफ़ बकिंघम इंग्लैंड वापस लौट गए। जब फ्रांस के प्रधान मंत्री कार्डिनल को यह पता चला तो उन्होंने लेडी केलरिक को, जो उनकी मित्र थी, चुपचाप इंग्लैंड भेज दिया, ताकि वहां वह ड्यूक के ख़िलाफ़ कोई गहरा षड्यन्त्र रच सके। प्रधान मंत्री के सिवा और किसी को पता भी नहीं चला कि लेडी फ्रांस छोड़कर चली गई है।

उधर जब लेडी केलरिक का जहाज़ इंग्लैंड के पोर्ट्-समाउथ नामक बन्दरगाह में पहुंचा तो वहां एक समारोह हो रहा था। नये तैयार हुए चार जहाज़ों को धूमधाम के साथ पानी में उतारा जा रहा था। ड्यूक भी सज-धजकर समारोह में भाग लेने के लिए वहां आए थे। लेडी ने अपने जहाज़ की छत पर से ही यह देख लिया था कि ड्यूक बन्दरगाह के घाट पर कुछ लोगों के साथ खड़े हैं।

इतने में अचानक एक घटना घट गई। जब लेडी अन्य

यात्रियों के साथ जहाज़ से उतरकर और एक नाव में बैठकर घाट की ओर जाने लगी तो अचानक एक आदमी ने उसको पहचान लिया। लेडी भी उसको जानती थी। वह बन्दरगाह पर यात्रियों की तलाशी लेने का काम करता था। वह बन्दरगाह पर नियुक्त खुफ़िया विभाग का दारोगा था। जब लेडी ने देखा कि वह बराबर उसके पीछे लगा हुआ है तो वह बहुत घबराई और मन में डरने लगी। लेकिन ऊपर से उसने नाराज़ होकर दारोगा से कहा, ''आप मेरे पीछे क्यों लगे हुए हैं ? मैं कोई परदेशी थोड़े ही हूं। मैं तो यहीं की हूं। मेरा नाम लेडी केलरिक है।

दारोगा बोला, ''जी हां, मैं जानता हूं। आपको किसी बात की तकलीफ़ न हो, इसीलिए मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूं।'' फिर वह कुछ रहस्यमय ढंग से मुस्कराकर बोला, ''यह लड़ाई का ज़माना है न, हम लोगों को हर आदमी की ठीक से जांच-पड़ताल करनी पड़ती है। मुझे आपके साथ आपके ठहरने की जगह तक जाना पड़ेगा। आइए, बाहर घोड़ागाड़ी तैयार खड़ी है। आपको किसी सराय में ठहरना है ?''

बन्दरगाह के दफ्तर के बाहर एक घोड़ागाड़ी खड़ी थी। लेडी के साथ दारोगा भी चुपचाप उसमें जा बैठा। गाड़ी चल पड़ी। गाड़ी में दारोगा बिलकुल चुप बैठा था। लेडी बुरी तरह घबरा रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आख़िर यह मुझे कहां ले जा रहा है। गाड़ी शहर के बाहर आ पहुंची थी। अंधेरा हो गया था। लेडी ने देखा कि गाड़ी शहर को छोड़कर किसी सुनसान इलाके में दौड़ी चली जा रही

थी। वह बोली, ''मुझे कहां ले जा रहे हो ? मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूंगी !''

लेकिन इतने पर भी दारोगा चुपचाप बैठा रहा और कुछ

नहीं बोला। अन्त में जब घबराकर लेडी ने चलती हुई गाड़ी से कूदने के लिए उसका दरवाज़ा खोलना चाहा तो वह बोला, ''आप यह कोशिश न कीजिए, वरना इससे आपका ही नुकसान होगा।''

अन्त में मन मारकर लेडी बड़बड़ाती हुई गाड़ी में बैठी रही। कुछ देर बाद गाड़ी एक मज़बूत किले के सामने आ खड़ी हुई। गाड़ी के रुकते ही किले का लोहे का फाटक खुल गया। दारोगा लेडी को उतारकर किले के अन्दर ले जाने लगा।

वह बोली, ''लगता है, तुम मुझे कैदख़ाने में पहुंचा रहे हो। लेकिन इतना याद रखो कि तुम मुझे ज्यादा दिनों तक यहां रख नहीं सकोगे, क्योंकि मैं बिलकुल निर्दोष हूं।''

लेकिन दारोगा कुछ नहीं बोला। उसने अपनी जेब से सीटी निकाली और उसे तीन बार बजाया। देखते-देखते कुछ सैनिक वहां आ पहुंचे। सैनिकों को गाड़ी की तरफ़ जाने का इशारा करके वह लेडी को पत्थर की एक सीढ़ी पर से होते हुए ऊपर की मंज़िल पर एक बैठक में ले आया।

बैठक की खिड़कियों में मोटे-मोटे सींखचे लगे हुए थे। असल में यह पूरा किला एक कैदख़ाना था। लेडी केलरिक एक आराम कुर्सी पर बैठ गई। उसे यह भी पता नहीं था कि किसके हुक्म से उसे यहां लाया गया है। अन्त में काफी देर तक चुप रहने के बाद उसने उस अफ़सर से पूछा, ''ईश्वर के नाम पर मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं, मुझसे यह न छिपाओ कि आख़िर मुझे यहां क्यों कैद किया जा रहा है ?''

इस पर दारोगा ने कहा, ''मुझे जितना मालूम है, उतना

ही मैं बता सकता हूं। इस कमरे में आपको रखने का हुक्म मिला है। इसीलिए मैं आपको यहां ले आया हूं। मुझे हुक्म मिला था कि बन्दरगाह से ही आपको यहां पहुंचा दिया जाए। मैंने अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया। अब मेरी जगह दूसरा आदमी आपको संभालेगा।''

लेडी केलरिक ने घबराकर पूछा, ''आख़िर वह दूसरा आदमी कौन है ?''

इतने में बाहर बरामदे में कुछ सिपाहियों के गुज़रने की आवाज़ हुई। इसके बाद धीरे-धीरे चलते हुए किसी के जूतों की आवाज़ पास आने लगी।

दारोगा बोला, ''जिनके बारे में तुम पूछ रही हो, वे खुद तुम्हारे सामने खड़े हैं।'' यह कहकर उसने दरवाज़े की ओर इशारा कर दिया। पहले लेडी केलरिक उसे पहचान न सकी। लेकिन फिर चौंककर बोली, ''अरे, भाई साहब आप !''

लार्ड विण्टर ने आगे बढ़कर सिर झुकाकर कहा, ''हां, देवी, मैं ही हूं। यह मेरा ही किला है।''

लेडी केलरिक ने आश्चर्य से कहा, ''तो क्या मैं मान लूं कि तुम्हीं ने मुझे कैद किया है। तुम्हारे किले में मैं एक कैदी की तरह हूं ? लेकिन यह व्यवहार तो तुम्हें शोभा नहीं देता !''

दारोगा के चले जाने के वाद लार्ड विण्टर बोले, ''तो तुम फिर से इंग्लैंड आ पहुंची ? तुमने तो पेरिस में कसम खाई थी कि तुम कभी इंग्लैंड नहीं आओगी। आख़िर अब अचानक तुम्हें इंग्लैंड क्यों आना पड़ा ?''

लेडी ने बहुत भोलेपन से कहा, "सिर्फ़ आपसे मिलने के लिए। इसमें आपको आश्चर्य क्यों हो रहा है ?" मैं सिर्फ़ आपसे ही मिलने के लिए यहां आई हूं।"

"अच्छा, तो तुम मुझे इतना चाहती हो, बहन ?"

"और क्या ! मैं तुम्हारी सबसे करीब की रिश्तेदार जो हूं।"

लार्ड विण्टर मुस्कराकर बोले, "हां, हां, क्यों नहीं। रिश्तेदार ही नहीं, मेरी एकमात्र वारिस भी तो हो।"

लेडी समझ गई कि लार्ड विण्टर के मन में उसके प्रति कोई सन्देह जमकर बैठ गया है। धीरे-धीरे बात बढ़ती गई। लार्ड विण्टर ने लेडी के सारे पापों को एक-एक करके गिनना शुरू किया। वे बोले, "मेरे भाई के मरने पर तुमने उसकी सारी सम्पत्ति हथिया ली। लेकिन उससे तुम्हें संतोष नहीं हुआ। अब तुम मेरी जायदाद भी हड़पना चाहती हो। लेकिन इतना याद रखो कि अगर मैं मर गया या तुम्हारे षड्यन्त्र के कारण मारा गया तो भी मेरे धन में से तुमको एक छदाम भी नहीं मिल सकता। मैंने सारा इन्तज़ाम कर लिया है। दस-पन्द्रह दिन में ही अंग्रेज़ फ़ौज को साथ लेकर तुम्हारे मित्र और फ्रांस के प्रधान मन्त्री कार्डिनल से युद्ध करने के लिए रोचल की रणभूमि में पहुंच जाऊंगा। लेकिन इसके पहले तुमको दूर समुद्र में किसी टापू में कैद कराकर ही जाऊंगा।"

लेडी केलरिक आश्चर्य और भय से आंखें फाड़कर उसकी तरफ़ देखती रही। लार्ड विण्टर ने आगे कहा, "इस बीच तुम्हें इसी किले में रहना पड़ेगा। यहां से भाग निकलना असंभव

है। मैंने पहरेदारों को हुक्म दे रखा है कि अगर तुमने यहां से भागने की कोशिश की तो तुरन्त गोली चलाई जाए। यह फेल्टन नाम का दारोगा, जो तुम्हें बन्दरगाह से यहां लाया था, तुम पर पूरी नज़र रखेगा।

इसके बाद लार्ड विण्टर ने दारोगा को अन्दर बुलाकर कहा, "फेल्टन, देखो, इसी महिला के बारे में मैं तुम्हें बताया करता था। यह स्त्री नहीं, राक्षसी है। अपनी पच्चीस की उम्र में ही यह दुनियाभर के सारे पाप कर चुकी है। अब यह मेरी हत्या करने के लिए इंग्लैंड आई है, लेकिन दुर्भाग्य से यह मेरे चंगुल में फंस गई है। इसे अदालत के हाथों उचित दण्ड दिलाना तुम पर ही निर्भर है।"

फेल्टन ने सलाम करके कहा, "जी, बहुत अच्छा ! मैं आपके हुक्म का पालन करूंगा।"

लार्ड विण्टर ने उनसे कहा, "देखो, होशियार रहना। यह ज़रा-सी देर के लिए यहां से बाहर न निकल सके और किसी के हाथ कोई चिट्ठी-पत्र न भेज सके। इसके अलावा, तुमको छोड़कर इस किले में यह किसी और से नहीं मिलेगी।" फिर उन्होंने लेडी केलरिक की ओर मुड़कर कहा, "अच्छा, अब मैं जा रहा हूं। मनुष्य की दृष्टि में तुम्हारा न्याय हो गया। अब तुम ईश्वर को याद करो।"

यह सुनकर लेडी केलरिक ने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया। लार्ड विण्टर बाहर निकल गए। फेल्टन ने भी बाहर आकर कमरे का दरवाज़ा बन्द कर दिया।

नौ

तीन दिन बाद लार्ड विण्टर कैदखाने में लेडी केलरिक से मिलने गए। उन्होंने जेब से एक कागज़ निकालकर दिया और कहा, ''यह रहा तुम्हारा हुक्मनामा। तुम्हें अब आगे से कहां रहना है, उस जगह का नाम मैंने इसीलिए ख़ाली छोड़ दिया है कि मैं अपनी इच्छा तुम पर लादना नहीं चाहता। इंग्लैंड से एक हज़ार मील दूर किसी भी टापू पर तुम रह सकती हो। सर बेक्सन नाम का एक आदमी तुम्हारे साथ जाएगा और पहरेदार की तरह तुम्हारे साथ टापू पर रहेगा। उसको टापू से तीन मील से ज्यादा दूर जाने का हुक्म नहीं है। अगर उसने भी कभी भागने की कोशिश की तो उसे भी मौत के घाट उतार दिया जाएगा।''

लेडी केलरिक ने उस काग़ज़ को देखकर कहा, ''यह कैसा हुक्मनामा है ? इस पर न तो किसी का दस्तख़त है और न ही मोहर !''

लार्ड विण्टर ने कहा, ''मालूम है कि कानून की जानकारी तुममें खूब है ! कल ही इसको बकिंघम के ड्यूक के पास दस्तख़त करने के लिए भेज दिया जाएगा और फिर चौबीस घंटे के भीतर ही इसको अमल में लाया जाएगा।''

लार्ड विण्टर के चले जाने के बाद लेडी केलरिक ने एक निःश्वास छोड़कर अपने मन में कहा, ''ख़ैर, अभी, दो-तीन दिन बाकी हैं।''

लेडी केलरिक को अब तक यह मालूम हो गया था कि फेल्टन नाम का जो दारोगा उसे बन्दरगाह से यहां तक लाया था, वह लार्ड विण्टर का बहुत ही विश्वासपात्र आदमी है। लेकिन वह आदमी की कमज़ोरियों को अच्छी तरह जानती थी। उसने तय किया कि यहां से भाग निकलने की योजना को पूरी कराने के काम में वह फेल्टन से पूरा लाभ उठाएगी। उसे अच्छी तरह मालूम था कि एक विधवा स्त्री होने के कारण वह किसी भी पुरुष की दया और सहायता प्राप्त कर सकती है।

अब तक उसने यह भी पता लगा लिया था कि फेल्टन प्यूरिटन धर्म का अनुयायी था, इसलिए बकिंघम के ड्यूक और उनके साथ के लोगों के प्रति उसके मन में ज़रा भी श्रद्धा नहीं थी। उन दिनों इंग्लैंड में धार्मिक भेद-भाव का बड़ा बोलबाला था। लेडी केलरिक ने इससे लाभ उठाने की तैयारी की। उसने फ़ौरन अपना रहन-सहन इस तरह बदल लिया, जैसे वह प्यूरिटन धर्म की मानने वाली हो।

अन्त में उसने फेल्टन के सामने खूब आंसू बहाते हुए कहा, ''मैं प्यूरिटन हूं, इसलिए लार्ड विण्टर की सहायता से

ड्यूक मुझे बरसों से तंग कर रहे हैं और अब मुझको देश निकाला देने वाले हैं। मुझे चारों तरफ़ समुद्र से घिरे एक टापू पर रखा जाएगा।"

उसकी बात सुनकर फेल्टन को बड़ा दुःख हुआ। साथ ही ड्यूक पर उसे भी बहुत गुस्सा आया। उसने वादा किया कि वह लेडी को छुड़ाने की पूरी कोशिश करेगा।

दूसरे दिन जब लार्ड विण्टर ने आकर उसे बताया कि उसको दक्षिण महासागर के एक टापू में रखा जाएगा, तो वह बिलकुल नहीं घबराई और बहुत शान्ति से बोली, "ठीक है, मैं तैयार हूं।"

उस दिन शाम से ही आकाश में घने बादल छाए हुए थे और रात होते ही मूसलाधार पानी बरसने लगा। जैसे-जैसे रात बीतने लगी, वर्षा और तूफ़ान बढ़ता गया। अचानक रात को दस बजे लेडी केलरिक की खिड़की पर किसी ने हल्के से आवाज़ की।

खिड़की खोलकर लेडी ने देखा कि बाहर फेल्टन खड़ा पानी में भीग रहा था। वह बोला, "तुम घबराना मत। अभी दो सींखचे और काटने हैं। तुम तैयार होकर बिस्तर पर बैठी रहो। मैं सींखचों को काटने के बाद फिर से इशारा करूंगा।" यह कहकर वह अपने काम में लग गया।

जब सींखचे कट गए, तो उसने इशारा देकर केलरिक को खिड़की से बाहर निकाल लिया। फेल्टन ने पहले से ही रस्सी की एक सीढ़ी खिड़की से बांध रखी थी। वह उसी पर खड़ा था। लेडी केलरिक पहले तो बुरी तरह घबरा गई। लेकिन

फिर अपना झोला खिड़की के नीचे फेंककर वह फेल्टन के पीछे-पीछे सीढ़ी से नीचे उतरने लगी। फेल्टन उसको बराबर सहारा देता रहा। अचानक किसी के पैरों की आहट आई और लेडी केलरिक का दिल ज़ोरों से धड़कने लगा।

"फेल्टन बोला, "नीचे पहरेदार घूम रहे हैं। तुम चुपचाप सांस रोककर यहीं खड़ी रहो। जब वे लोग हट जाएंगे तब हम नीचे उतरेंगे।"

थोड़ी देर में पहरेदार दूसरी तरफ़ चले गए और फेल्टन लेडी केलरिक को लेकर नीचे कूद पड़ा। अब वे लोग किले के बाहर थे। झोला उठाकर फेल्टन आगे-आगे चलने लगा। उसे एक गुप्त रास्ता मालूम था। उससे होकर थोड़ी ही देर में वे दोनों समुद्र के किनारे जा पहुंचे।

समुद्र के किनारे बिल्कुल अंधेरा था। फेल्टन के तीन बार सीटी बजाने पर थोड़ी ही देर में एक नाव समुद्र की लहरों को पार करती हुई किनारे आ लगी। दोनों उसमें बैठे। मल्लाहों ने तेज़ी से नाव को चलाना शुरू कर दिया। देखते-देखते नाव किनारे से बहुत दूर निकल गई।

कुछ देर बाद नाव एक जहाज़ के पास जा पहुंची। फेल्टन ने कहा, "यह जहाज़ मैंने तुम्हारे लिए किराए पर लिया है। मुझे यह पोर्ट्समाउथ के बन्दरगाह में छोड़ देगा और तुमको तुम जहां कहोगी वहां पहुंचा देगा। पोर्ट्समाउथ में मुझको लार्ड विण्टर के हुक्म के मुताबिक एक काम करना है। मुझे ड्यूक से मिलकर हुक्मनामे पर दस्तखत लेने हैं। अगर कल मैं उनसे नहीं मिलूंगा तो फिर वे यहां चले आएंगे, क्योंकि कल ही वे

बहुत बड़ी फ़ौज लेकर रोचल की लड़ाई में भाग लेने के लिए जाने वाले हैं।''

लेडी केलरिक ने फेल्टन को धन्यवाद देते हुए कहा, ''फेल्टन, तुम प्यूरिटन धर्म के लिए बहुत बड़ा काम कर रहे हो। तुम्हारा नाम इंग्लैंड और धर्म के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।''

तब तक उनकी नाव जहाज़ के पास पहुंच गई। जहाज़ से रस्सी की एक सीढ़ी नीचे लटकाई गई। दोनों उसके सहारे जहाज़ में चढ़ गए। जहाज़ के कप्तान के साथ लेडी केलरिक का परिचय कराते हुए फेल्टन बोला, ''इन्हीं के बारे में मैंने तुम्हें बताया था। इनको सही-सलामत फ्रांस की ज़मीन पर छोड़ आओ। ये बोलोन बन्दरगाह में उतरना चाहती हैं। तुम्हें पांच सौ मुहरें दी जा चुकी हैं, अब पांच सौ और देनी बाकी हैं।''

लेडी केलरिक ने बीच में ही कहा, ''कप्तान, अगर तुमने सही-सलामत मुझको बोलोन पहुंचा दिया, तो मैं बाकी पांच सौ मुहरों की जगह एक हज़ार मुहरें दूंगी।''

पोर्ट्समाउथ बन्दरगाह जब थोड़ी दूर रह गया तो फेल्टन जहाज़ से एक छोटी नाव में उतरकर किनारे की ओर रवाना हो गया। विदा के समय दोनों में तय हुआ कि अगर फल्टन गिरफ्तार नहीं किया गया, तो अपना काम पूरा करके फ्रांस के बेथून नाम के नगर के प्यूरिटन धर्म के मठ में लेडी केलरिक से मुलाकात करेगा।

लेडी केलरिक को लेकर जहाज़ तेज़ी से फ्रांस की ओर चल पड़ा।

दस

जब फेल्टन पोर्ट्समाउथ पहुंचा तो सुबह के आठ बज चुके थे। सड़कों पर लोगों का आना-जाना शुरू हो गया था। युद्ध के बाजे बज रहे थे और समुद्र के किनारे सिपाहियों के झुण्ड इकट्ठे हो रहे थे। थोड़ी ही देर में वह ड्यूक के महल के पास पहुंचा।

बकिंघम के ड्यूक और लार्ड विण्टर में बड़ी दोस्ती थी। जब सिपाहियों ने ड्यूक को सूचित किया कि लार्ड विण्टर का एक आदमी आपसे मिलना चाहता है, तो उन्होंने उसको फ़ौरन पहुंचाने का हुक्म दिया।

अन्दर जाकर फेल्टन ने ड्यूक से कहा, ''वह महिला जिसको देश-निकाले का हुक्म दिया जा रहा है, बड़ी भली और धार्मिक महिला है। वह तो बिल्कुल देवी है। आप इस हुक्मनामे पर दस्तख़त करने के बजाय इस दूसरे काग़ज़ पर दस्तख़त कर दीजिए, जिसमें उसकी रिहाई का हुक्म लिखा हुआ है !'' यह कहकर फेल्टन ने एक दूसरा काग़ज़ भी खिड़की निकालकर ड्यूक के सामने रख दिया।

ड्यूक को यह देखकर गुस्सा आया। उन्होंने डांटकर कहा, ''कहीं तुम पागल तो नहीं हो गए हो। तुम हो कौन ? ड्यूक को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसकी राय देने वाले तुम कौन हो?''

फेल्टन पर तो धर्म का नशा सवार था। लेडी केलरिक के कहने पर वह मान बैठा था कि ड्यूक इंग्लैंड में प्यूरिटन धर्म के माननेवालों के सबसे बड़े शत्रु हैं। वह कड़ककर बोला, ''ड्यूक, आपके अत्याचार से आज इंग्लैंड की जनता त्राहि-त्राहि कर उठी है। आपने पूरे राज्य पर कब्ज़ा कर रखा है और मनमाने ढंग से लोगों को तंग करते रहते हैं। मैं आपको ख़बरदार करना चाहता हूं ! इस काग़ज़ पर तो आपको दस्तख़त करना ही पड़ेगा, क्योंकि लेडी केलरिक बहुत भली महिला हैं। उनको देश-निकाले की सज़ा बहुत बड़ा अन्याय है।''

अब ड्यूक ज्यादा सहन नहीं कर सके। उनकी तलवार दूर रखी थी। वे तलवार उठाने के लिए लपके। लेकिन तब तक फेल्टन अपनी कमर से छुरी निकालकर उसके रास्ते में आ खड़ा हुआ।

ड्यूक घबराकर दो कदम पीछे हट गए। फिर उन्होंने अपने एक नौकर को आवाज़ दी। फेल्टन को लगा कि अब देरी करना ठीक नहीं है। वह दूर से ही ड्यूक पर कूद पड़ा। उसकी छुरी ड्यूक की छाती के पार हो गई। ड्यूक लहूलुहान होकर ज़मीन पर गिर पड़े।

जब तक ड्यूक का कोई आदमी वहां पहुंचे, फेल्टन

खिड़की में से कूदकर महल के बाहर आ गया। कुछ दूर पहुंचने पर एक मोड़ के पास अचानक लार्ड विण्टर से उसकी भेंट हो गई।

लार्ड हांफते हुए चले आ रहे थे। उन्हें कुछ देर पहले ही मालूम हुआ था कि लेडी केलरिक भाग निकली। फेल्टन को खून से सनी हुई छुरी लेकर ड्यूक के मकान के पास से भागते हुए देखकर लार्ड विण्टर ने सब-कुछ समझ लिया।

वे बोले, "फेल्टन, यह तुमने ठीक नहीं किया ! उस दुष्ट स्त्री के फंदे में फंसकर तुमने इंग्लैंड का कितना बड़ा नुकसान किया है !"

इसके बाद लार्ड विण्टर ने फेल्टन को लेडी केलरिक का सारा किस्सा कह सुनाया। उन्होंने बताया कि कितनी दुष्ट स्त्री है और अब तक कैसे-कैसे अपराध कर चुकी है।

फेल्टन बोला, "लेकिन उसने तो मुझे बताया था कि वह धर्म के लिए ही जीवन बिता रही है। उसने पूरी तरह मेरा साथ देने का वादा किया था। उसने कहा था कि धर्म के युद्ध में मैं मारा गया तो वह अपनी जान दे देगी।"

लार्ड विण्टर ने कहा, "अरे मूर्ख, मरना तो तुमको होगा ! वह तो हमेशा जीवित रहने की कोशिश करेगी और देश का सर्वनाश करके ही दम लेगी !"

यह सुनकर फेल्टन मारे शर्म के अपना मुंह छिपाकर ज़मीन पर बैठ गया। लार्ड विण्टर के सिपाहियों ने आकर उसको गिरफ्तार कर लिया। लार्ड ने कहा, "यह न समझना कि अकेले तुमको ही सज़ा मिलेगी। जिस दुष्ट स्त्री ने तुझको इस काम

के लिए भड़काया था, उसे मैं जहां से भी होगा, खोज निकालूंगा और उचित सज़ा दूंगा।"

ग्यारह

लार्ड विण्टर ने बहुत खोज करने के बाद अन्त में यह पता लगा ही लिया कि लेडी केलरिक फ्रांस के बेथून शहर में रह रही है।

फ्रांस पहुंचने पर लार्ड विण्टर ने ऐथोस, पार्थस और अरामिस नाम के तीनों तिलंगों से मुलाकात की। फिर दार्ता से भी उन्होंने बातचीत की और उसको सारा किस्सा बताया। दार्ता पहले से ही लेडी केलरिक से घृणा करता था और अब तो उसके गुस्से की कोई सीमा ही नहीं थी। उसने तीनों साथियों के साथ कसम खाई कि जैसे भी होगा, लेडी कलरिक को खोज निकाला जाएगा।

दूसरे दिन जब सब लोग जाने के लिए तैयार हुए तो एथोस ने कहा, 'हम लोगों को थोड़ी देर इंतज़ार करना पड़ेगा, क्योंकि हमारे साथ एक और आदमी है ?''

उसके साथियों ने पूछा, ''कौन है वह ?''

ऐथोस ने कहा, ''यह मैं अभी नहीं बताऊंगा। जब बताने का समय आएगा, तो मैं खुद ही उसके बारे में बता दूंगा।''

इसके बाद उसके साथियों ने इस सम्बन्ध में उससे कुछ नहीं पूछा। कुछ देर बाद जिरहबख़्तर पहने एक घुड़सवार सैनिक वहां आ पहुंचा। उसने अपने चेहरे पर नकाब डाल रखी थी।

फिर सब लोग अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर बेथून नगर की ओर चल पड़े। दिन-भर की यात्रा के बाद वे लोग एक मकान के आगे आ खड़े हुए। दूसरे लोगों को वहीं रोककर ऐथोस अकेला आगे बढ़ा।

मकान के पास पहुंचने पर उसने देखा कि एक कमरे की खिड़की थोड़ी-सी खुली हुई है। अन्दर झांकने पर उसने पहचान लिया कि जिस स्त्री की खोज में वे लोग आए थे, वह अन्दर एक टेबुल के पास बैठी थी। वह लेडी केलरिक ही थी।

ऐथोस ने अपने सिपाही को इशारा किया। फिर वह पलक मारते ही खिड़की में से कमरे में कूद गया। उसको अन्दर आते देखकर लेडी केलरिक ने भागने के लिए कमरे का दरवाज़ा खोला, लेकिन यह देखकर उसके हाथ-पैर फूल गए कि दार्ता नंगी तलवार लिए दरवाज़े में खड़ा था। देखते-देखते उसके दूसरे साथी भी कमरे में आ पहुंचे।

लेडी केलरिक ने जब देखा कि यहां से बचकर निकल पाना मुश्किल है, तो उसने कांपती हुई आवाज़ में पूछा, ''आप लोग कौन हैं ? यहां क्या करने आए हैं ?''

ऐथोस ने उत्तर दिया, ''हम लोग शेरलट नाम के एक आदमी को लेने आए हैं। और फिर तुम्हारी भी हम लोगों

को खोज थी !''

''क्यों, मुझसे तुम्हें क्या काम है ?''

''हम न्याय के लिए तुमको ले जाना चाहते हैं। तुम्हें अपने बचाव का पूरा हक रहेगा। तुम्हारे ख़िलाफ़ जो शिकायतें हैं, वे भी तुम्हें बताई जाएंगी। दार्ता पहले तुम्हीं बताओ कि इस महिला के ख़िलाफ़ तुम्हें क्या कहना है ?''

दार्ता ने कहा, ''मैं ईश्वर की शपथ लेकर कहता हूं कि इस महिला ने मुझको ज़हर खिलाकर मार डालने का षड्यन्त्र रचा था। लेकिन ईश्वर की कृपा से मैं बच गया और एक दूसरा आदमी मारा गया।''

दार्ता की बात सुन पार्थस और अरामिस ने एक-साथ कहा, ''दार्ता की बात सही है। हम लोग इसकी गवाही दे सकते हैं।''

इसके बाद ऐथोस के कहने पर लार्ड विण्टर ने गुस्से से कांपते हुए कहा, ''इस स्त्री ने एक धर्मान्ध युवक को भड़काकर बकिंघम के ड्यूक की हत्या करा डाली। मेरी शिकायत यहीं नहीं पूरी होती। मेरे भाई के साथ एक स्त्री की शादी हुई थी। लेकिन शादी के कुछ दिनों बाद ही एक छोटी-सी बीमारी से मेरे भाई की मृत्यु हो गई। मैं अभी तक नहीं जान पाया हूं कि आख़िर उसकी मृत्यु कैसे हुई थी। इसके पहले एक फ्रांसीसी से इनकी शादी हो चुकी थी। उसकी मुझे चिन्ता नहीं। मैं यह जानना चाहता हूं कि मेरे भाई की मृत्यु किस तरह हुई ?''

यह सुनकर लेडी केलरिक ने हाथों से अपना मुंह छिपा

लिया और ज़मीन पर बैठ गई। इसके बाद ऐथोस बोला, ''अब मेरी शिकायत सुन लो। जब इस स्त्री की उम्र कम थी, तब मेरे ही साथ इसका विवाह हुआ था...।''

यह सुनकर सब लोग आश्चर्य से चौंक पड़े। ऐथोस ने

आगे कहा, ''अपने परिवार के लोगों की सलाह को न मानकर मैंने इसके साथ विवाह किया था। अपनी सारी सम्पत्ति मैंने इसको सौंप रखी थी। इस बीच एक दिन मैंने इसके बाएं कंधे पर एक फूल का दाग बना हुआ देखा, जो ऐसे लोगों को लगाया जाता है, जिन्हें अदालत की ओर से सज़ा मिली होती है।''

लेडी केलरिक बीच में ही बोली, ''एक न्यायाधीश ने झूठमूठ ही मुझको सज़ा दी थी। मेरे साथ अन्याय किया गया था।''

इस पर वह बख़्तरधारी सैनिक आगे आकर बोला, ''तुम्हारी इस बात का जवाब मैं दे सकता हूं।'' यह कहकर उसने अपने चेहरे से नकाब हटा दी।

उसका चेहरा देखकर लेडी केलरिक घबराकर चीख़ पड़ी, ''नही, नहीं, तुम कौन हो ? क्या तुम सचमुच ज़िन्दा हो ! हे भगवान...।''

इस पर सब लोगों ने उस सैनिक से पूछा, ''आप कौन हैं ?''

वह सैनिक बोला, ''यह आप लोग इस स्त्री से ही पूछ लीजिए। यह मुझको बहुत मज़े में पहचानती है।''

लेडी केलरिक भय से कांपती हुई बोली, ''हां, मैं तुम्हें पहचानती हूं ! तुम लिली शहर की जेल के जेलर हो !...मुझे माफ़ कर दो !...''

वह अजनबी सैनिक रहने लगा, ''हां, मैं ही लिली की जेल का जेलर हूं। मेरा किस्सा इस तरह है—जब इसका विवाह नहीं हुआ था, तब यह फ्रांस के एक मठ में भिक्षुणी की तरह

रहती थी। उसी मठ में एक अभागा संन्यासी भी रहता था; इसने किसी तरह उसको भरमाया और अपना धर्म छोड़कर मठ से भाग निकलने को कहा। इन लोगों के पास रुपया-पैसा नहीं था। इसीलिए इस लड़की ने मठ के बर्तन चुराए और उनको बेचकर पैसे इकट्ठे किए। फिर दोनों मठ से भाग निकले।

''लेकिन भाग्य के मारे कुछ ही दिनों में ये दोनों पकड़ लिए गए। दोनों को जेल की सज़ा मिली। लेकिन यह लड़की चालाक थी। इसने कैदखाने के एक जवान सिपाही को अपने चंगुल में फंसाया और उसकी मदद से वहां से भाग निकली। और, उस अभागे संन्यासी को दस साल की सज़ा हो गई।

''दस साल की सज़ा काट लेने के बाद उस संन्यासी को कैद से छुट्टी मिली। सज़ा काटे हुए आदमी की पहचान के लिए उसके कंधे पर फूल का एक निशान दाग दिया जाता था। यह काम मेरे ही ज़िम्मे था। मैंने उस संन्यासी के कंधे पर लोहे की मुहर को गरम करके फूल के निशान को दाग दिया। वह संन्यासी और कोई नहीं, मेरा ही छोटा भाई था। उस दिन से मैंने कसम खाई कि जैसे भी होगा, इस लड़की को मैं ज़रूर सज़ा दूंगा।

बहुत दिनों बाद मैं इसको पकड़ पाया। मैंने खुद अपने हाथ से इसके बाएं कंधे पर फूल की मुहर दी थी, ताकि लोगों को यह मालूम हो सके कि यह भी चोरी के अपराध में जेल जा चुकी है। बाद में मुझे पता चला कि मेरा भाई भी जेल से भाग निकला। सरकार को मुझपर शक हुआ और भाई की जगह मुझे जेल में बन्द कर दिया गया। लेकिन एक दिन जब

मेरे भाई को यह मालूम हुआ, तो वह खुद ही वापस लौट आया और जेल से भागने के अपराध में फांसी पर चढ़ गया।''

उसकी बात पूरी होने पर ऐथोस ने सब लोगों से पूछा, ''इस स्त्री ने अपने जीवन में बहुत अपराध किए हैं। लेकिन अपनी चालाकी से यह हमेशा बचती रही है और अपनी जगह किसी निर्दोष व्यक्ति को फंसाती रही है। आज हम लोग खुद इसे सज़ा देंगे। बोलो, इसे कौन-सी सज़ा दी जानी चाहिए।''

सब लोगों ने एक स्वर में कहा, ''मौत !''

लेकिन उन लोगों ने अपने हाथों से उस दुष्ट स्त्री को नहीं मारा। वह खुद ही नदी में डूबकर मर गई।

इस तरह दार्ता और उसके साथी तिलंगों ने अन्याय से लोगों की रक्षा करने और अन्यायियों को सज़ा देने का काम ज़ारी रखा।

●●●